कलीसिया। अध्याय 7

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। उसकी उपस्थिति और उसकी आवाज़ सुनने के लिए, उसकी आत्मा के द्वारा परमेश्वर के मार्गदर्शन के लिए ***प्रार्थना*** करें। कलीसिया के भवन के बारे में दी जाने वाली इस शिक्षा और अपने समूह को परमेश्वर के सम्मुख समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट)	*[शान्त समय]* *1 कुरिन्थियों 6-8*

दिए गए बाइबल अनुच्छेद (1 कुरिन्थियों 6-8) में से अपने चुने हुए समय में से आपने जो कुछ सीखा है, उसे ***एक-एक*** करके दूसरों के साथ ***बाँटें*** *(**या** अपने नोट्स में से **पढ़ें**)*।
जो व्यक्ति अपनी बातों को बाँट रहा है, उसे ध्यान से सुनें, उसकी बातों को गम्भीरता से लें और उसे स्वीकार करें। जिन बातों को वह बाँट रहा है उस पर चर्चा न करें। उन बातों को लिख लें।

3	**याद करें** (5 मिनट)	*[यूहन्ना में पाए जाने वाले मुख्य पद]* *(1) यूहन्ना 1:14*

दो-दो करके ***समीक्षा*** करें।

(1) यूहन्ना 1:14 - वचन देहधारी हुआ और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।

4	**शिक्षा** (85 मिनट)	*[कलीसिया का पर्व]* *स्वर्गारोहण - मसीह के राज्याभिषेक के दिन को स्मरण करना*

प्रस्तावित करें। स्वर्गारोहण एक मसीही उत्सव है जिसमें हम यीशु मसीह के पृथ्वी से स्वर्ग तक जाने और राजाओं के राजा के रूप में राज्य करने के दिन को स्मरण करते हैं। हम ये सीखेंगे कि बाइबल, यीशु के जी उठने और उसके सिंहासन पर विराजमान होने और मसीहों के ऊपर इसके प्रभाव के बारे में क्या सिखाती है। हम सीखेंगे कि उसके स्वर्गारोहण और भविष्यद्वाणी कैसे की गयी; और कैसे उसका स्वर्गारोहण और सिंहासन सबको प्रभावित करता है।

क. यीशु के स्वर्गारोहण के बारे में की गयी भविष्यद्वाणियाँ

भजन संहिता की पुस्तक सन् 1000 ई।पू। लिखी गई थी। यशायाह की पुस्तक सन् 700 ई।पू। लिखी गई थी। और यीशु ने अपने स्वर्गारोहण की भविष्यद्वाणी अपनी मृत्यु के क़रीब 30वीं सदी में की थी, इस प्रकार वास्तव में यह 40 से अधिक दिनों से पहले हुआ।

1. भजन संहिता 24:1-10 - परमेश्वर के साथ मसीहियों का प्रतिनिधित्व करने के लिए स्वर्गारोहण (जी उठना)
जब दाऊद के शहर के (सिय्योन) एक तम्बू में वाचा के सन्दूक को उसके नये स्थान पर ले जाया जा रहा था, तब दाऊद के इस भजन की रचना की हुई और इसे गाया गया (2 शमूएल अध्याय 6)। सन्दूक को पृथ्वी पर परमेश्वर के निवासस्थान के रूप में माना जाता था (1 इतिहास 13:6)। इस अवसर पर दाऊद ने पलिश्तियों से पहले से ही लिए गए सन्दूक को लाने के लिए 30 हज़ार चुने हुए पुरूष भेजे। उसने और इस्राएल के पूरे घराने में यहोवा के सामने गीत गाकर

डफ, वीणा, सारंगी, तुरहियाँ और साँझ बजाकर पर्व मनाया। लोग आनन्दित होकर चिल्लाए और तुरहियाँ फूँकी। उन्होंने गाया कि पृथ्वी, यहाँ की प्रत्येक वस्तु और इसमें रहने वाले प्रत्येक जीव सब **परमेश्वर** के हैं। जब यहोवा के सन्दूक उठाने वाले छः कदम चल चुके, तब उन्होंने एक बैल और एक पाला हुआ बछड़ा बलि कराया। और दाऊद सनी का एपोद कमर में कसे हुए यहोवा के सम्मुख तन-मन से नाचता रहा।

तब एक प्रश्न पूछा गया : "यहोवा के पर्बत (सिय्योन) पर कौन चढ़ सकता है? उसके पवित्रस्थान में (जो सिय्योन में मोरिय्याह पर्बत के सामने था) कौन खड़ा रह सकता है?" इसके जवाब में उत्तर आया : "जिसके काम निर्दोष और हृदय शुद्ध है, जिसने अपने मन को व्यर्थ बात की ओर नहीं लगाया (किसी और "परमेश्वर" की ओर, जो बाइबल का परमेश्वर नहीं है) या न कपट से शपथ खाई है। वह यहोवा की ओर से आशीष पाएगा और अपने उद्धार करने वाले परमेश्वर की ओर से धर्मी ठहरेगा।" बाइबल में आशीष, परमेश्वर का राज्य (मत्ती 25:34), वायदा किया गया पवित्र आत्मा (गलातियों 3:14), परमेश्वर के लेपालक बेटे-बेटियों, छुटकारा और क्षमा के रूप में पाई जाती है (इफिसियों 1:3-7)। धार्मिकता उद्धार से जुड़ी हुई है। भजन संहिता 24 के सन्दर्भ में इस तरह के लोगों के बारे में यह कहा जाता है कि "ऐसे ही लोग उसके खोजी हैं" जो सच्चाई और परमेश्वर की उपस्थित को खोजते हैं।

लेकिन भजन 24 एक मसीही भविष्यद्वाणी, यीशु मसीह के स्वर्गारोहण की ओर इशारा करता है! परन्तु नये नियम के अनुसार, यीशु मसीह के अलावा और कोई भी स्वर्ग पर नहीं चढ़ सकता और न ही परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में खड़ा रह सकता है! कोई भी स्वयं की योग्यता के आधार पर उत्तीर्ण नहीं हो सकता। किसी भी व्यक्ति के हाथ शुद्ध और पवित्र नहीं है (रोमियों 3:9-18)। व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के यहाँ कोई धर्मी नहीं ठहरता (गलातियों 3:10-11) और न ही भले कर्मों के कारण (इफिसियों 2:9-8)। सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है (रोमियों 3:23)।

परन्तु यीशु इस योग्य ठहरा! वह पूरी तरह से पाप रहित और सिद्ध है (इब्रानियों 4:15; 7:26,28)। यीशु मसीह हमारे प्रतिनिधि के रूप में स्वर्ग पर चढ़ा और परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में खड़ा है।

स्वर्ग में परमेश्वर के साथ मसीहियों का प्रतिनिधित्व करने के लिए यीशु का स्वर्गारोहण हुआ

"क्योंकि मसीह ने उस हाथ के बनाए हुए पवित्र स्थान में जो सच्चे पवित्रस्थान का नमूना है, प्रवेश नहीं किया, पर स्वर्ग ही में प्रवेश किया, ताकि हमारे लिये अब परमेश्वर के सामने दिखाई दे" (इब्रानियों 9:24)। मसीह लोग इसको स्वर्गारोहण के पर्व के रूप में मनाते हैं।

2.भजन संहिता 68:16-20,24-25,28-30 - विजय प्राप्त लोगों को परमेश्वर के पास बन्धुवाई में ले जाने के लिए स्वर्ग पर चढ़ा।

क्योंकि परमेश्वर पहले से ही इस्राएल के पर्बतों पर राज्य करता है, विशेषकर सिय्योन पर, इसलिए भजन 68:17 में सन्दूक को सिय्योन में लाने का उल्लेख पहली बार नहीं कर सकते। इसका उल्लेख काफी बार किया गया है कि सन्दूक को युद्ध में इस्राएल की सेना के साथ ले जाया गया था और उसे सिय्योन में अपने विश्राम स्थान पर लौटा लाया गया। ऊपर दी गई इसी रीति का प्रयोग किया गया (2 शमूएल 11:11; तुलना करें 1 शमूएल 4:3-9)।

यीशु मसीह को विजयी योद्धा के रूप में दर्शाया गया है जो युद्ध को जीतकर अपने निवासस्थान (सिय्योन) में जा रहा है, उसके पीछे उसके बेशुमार रथ, बन्दी और विजयी देशों से प्राप्त उपहार (भेंटें) हैं। फिर परमेश्वर की विजयी यात्रा का विस्तार इस प्रकार से किया गया : "मेरे ईश्वर, मेरे राजा की गति (उसके दिव्य विशेषताओं की महिमा) पवित्रस्थान (सिंहासन) में दिखाई दी है" (पद 24); गानेवाले आगे-आगे और तारवाले बाजों के बजानेवाले पीछे-पीछे गए, चारों ओर कुँवारियाँ डफ बजाती थी (पद 25)। परमेश्वर इसलिए आया ताकि वह अपने शत्रुओं के सिर को कुचले (पद 21), और परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध जो युद्ध करने से प्रसन्न रहते हैं, उन्हें तितर-बितर करे (पद 30; तुलना करें - यशायाह 27:1)। इन देशों को "नरकटों के बीच बनैले पशु" के रूप में वर्णित किया जाता है संभवतः जलगज (इब्रानी में : बेहेमोथ) (अय्यूब 40:15-24) या मगरमच्छ (इब्रानी में : लिब्यातान) (अय्यूब 41:1-11) और वे उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो परमेश्वर के लोगों को सताते और उन्हें दबाते हैं।

यीशु मसीह विजयी योद्धा के रूप में अपने साथ बन्दियों को लिए हुए स्वर्ग पर चढ़ा

"इसलिए वह कहता है, कि वो ऊँचे पर चढ़ा, और बन्धुवाई को बाँध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए। (उसके चढ़ने से, और क्या पाया जाता है केवल यह, कि वह पृथ्वी की निचली जगहों में उतरा भी था : और जो उतर गया यह वही है जो सारे आकाश के ऊपर चढ़ भी गया, कि सब कुछ परिपूर्ण करें)" (इफिसियों 4:8-10)। पुराने नियम में (भजन

68), परमेश्वर के बारे में जो कुछ कहा गया, उसे नए नियम में यीशु मसीह द्वारा पूरा किया।

3. यशायाह 9:6-7 - अपने राज्य को स्थापित करने, बढ़ाने और राज्य करने के लिए स्वर्ग पर चढ़ा।

क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है, और प्रभुता उसके काँधो पर होगी, और उसका नाम अद्‌भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा। उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिये वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिये न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा (यशायाह 9:6-7)।

पृथ्वी पर पैदा हुए बालक को "पराक्रमी परमेश्वर" कहा जायेगा और उसका ईश्वरीय स्वभाव "अनन्तकाल के पिता" के समान होगा। जबकि यशायाह 10:20-22 में यहोवा को "पराक्रमी परमेश्वर" कहा जाता है, यशायाह 9:6 में प्रभु यीशु मसीह को भी "पराक्रमी परमेश्वर" कहा जाता है। स्वर्गारोहण और सिंहासन पर विराजमान होने के बाद सारी प्रभुता उसके काँधों पर होगी। दुनिया के हर देशों में उसकी प्रभुता की वृद्धि का कोई अन्त नहीं है। यीशु मसीह के प्रायश्चित के बलिदान के द्वारा, परमेश्वर और मनुष्य के बीच में शान्ति उत्पन्न हुई (रोमियों 5:1-11)। उसने यहूदियों और गैर-यहूदियों के बीच शत्रुता को नाश किया और क्रूस के माध्यम से उनके बीच शान्ति स्थापित की (इफिसियों 2:14-17)। अगर आज यहूदी और गैर-यहूदी के बीच कोई शान्ति नहीं है तो यह इसलिए है क्योंकि वे इसे नहीं चाहते हैं। (वे परमेश्वर और उसकी योजना के खिलाफ विद्रोह करते हैं)! भविष्यद्वाणी कहती है कि यीशु मसीह अपने राज्य को स्थापित करेगा और उसे बढ़ायेगा (उस पर राज्य करके) और अपने पहले आगमन से (अनन्तकाल तक) अपने आने के समय तक इसे न्याय और धार्मिकता के साथ बनाए रखेगा।

सभी देशों और सम्पूर्ण जगत पर राज्य करने के लिए यीशु मसीह स्वर्ग पर चढ़ा।

4. यूहन्ना 3:9-13 - मनुष्यों को स्वर्ग और पृथ्वी की बातें प्रगट करने के लिए स्वर्ग पर चढ़ा।

स्वर्ग से मसीह स्वर्गीय बातों को प्रगट करता है और उसके स्वर्गारोहण के द्वारा उन बातों को पूरा किया गया जाता है।

(1) इतिहास में एकमात्र यीशु मसीह ही है जो स्वर्ग से *उतरा* और वापस स्वर्ग पर *चढा*।

यीशु मसीह ने ये दावा किया कि मानव इतिहास में ऐसा कोई नहीं जो स्वर्गीय बातों का पता लगाने के लिए पृथ्वी से स्वर्ग पर चढ़ा हो। केवल यीशु मसीह ही स्वर्ग में रहा और स्वर्ग से उतरा। केवल वह स्वर्गीय बातों को जानता है और स्वर्गीय बातों को प्रगट करता है (यूहन्ना 3:9-13)। यीशु पृथ्वी की निचली जगहों पर उतरा (सचमुच : पृथ्वी के सबसे नीचे के स्थानों में) और वह सारे आकाश के ऊपर भी *चढ़ गया* (हवा या वायुमण्डल से भी ऊपर, तारों और सम्पूर्ण जगत से भी ऊपर, वह स्वर्ग पर चढ़ गया जहाँ परमेश्वर रहता है)[1] कि सब कुछ पूरा करे (इफिसियों 4:9-10)। इतिहास का कोई अन्य भविष्यद्वक्ता या जिसने "एक भविष्यद्वक्ता" होने का दावा किया हो, कभी भी स्वर्ग से उतरा और न ही कभी स्वर्ग पर चढ़ा! हनोक और एलिय्याह स्वर्ग में उठा तो लिए गए परन्तु कभी भी वह स्वर्ग से नहीं उतरे। इस दुनिया में अन्य मतों (धर्मों) और सम्प्रदायों के सभी भविष्यद्वक्ता अभी भी अपनी कब्रों में मृत पाए जाते हैं। वे स्वर्ग से कभी नहीं उतरे और न ही वे स्वर्ग पर कभी चढ़े।

इतिहास में कई लोग मरे हुओं में से *जिलाए गए* हैं, लेकिन बाद में फिर से उनकी मृत्यु हो गई। यीशु मसीह ही एक ऐसा है जो मानवीय रूप में होते हुए मृतकों में से *जी उठा* और अभी भी जीवित है। यीशु मसीह ही एकमात्र ऐसा है जो स्वर्ग से उतरा और स्वर्ग पर चढ़ा। यह तथ्य साबित करता है कि यीशु मसीह सभी समय के जो बड़े भविष्यद्वक्ता थे उन सबसे कहीं अधिक बड़ा था! वह न केवल महायाजक, महान भविष्यद्वक्ता और सर्वशक्तिमान राजा है बल्कि परमेश्वर भी है! वह ऐसा परमेश्वर है जिसने अपने ईश्वरीय स्वभाव को छोड़े बिना मनुष्य के स्वभाव को धारण किए रहा। वह ऐसा परमेश्वर है जिसने न सिर्फ स्वयं को बादलों और आग के बीच प्रगट किया (निर्गमन 3:2; 13:21; 19:18), बल्कि एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व, यीशु मसीह में भी अपने आप को प्रगट किया (यूहन्ना 14:14,18)। वह ऐसा मनुष्य नहीं है जो परमेश्वर दिखने का दिखावा करता हो, परन्तु वह ही परमेश्वर है जिसने अपने ईश्वरीय स्वभाव को छोड़े बिना मनुष्य के स्वभाव को धारण किया था!

(2) यीशु मसीह स्वर्ग से इसलिए उतरा ताकि मनुष्य जाति पर स्वर्ग और पृथ्वी की बातों को प्रगट करे (यूहन्ना 3:12)।

यूहना 3:11 में, यीशु ने कहा, कि वह स्वयं और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला "स्वर्गीय बातों" को जानते हैं और उसके

विषय में गवाही भी दी। परन्तु यहूदी धर्म को माननेवाले अगुवों ने उनकी इस गवाही को ग्रहण नहीं किया। यीशु यह कह सकता था, क्योंकि वह आप ही जानता था कि उनके मन में क्या है और यीशु उन्हें जो शिक्षा दे रहा था वह उस शिक्षा के प्रति उनकी हिचकिचाहट को देख सकता था (तुलना करें 2:25)।

यूहन्ना 3:12 में, यीशु ने कहा, "जब मैंने तुम से पृथ्वी की बातें कहीं, और तुम प्रतीति नहीं करते, तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें कहूँ, तो फिर क्योंकर प्रतीति करोगे?"

पृथ्वी की बातें।

यीशु मसीह उन बातों के विषय में कहा, जिनकी उत्पत्ति और स्वभाव स्वर्गीय है, परन्तु वे पृथ्वी पर पाई जाती हैं। उदाहरण के लिए : "पृथ्वी की बातें" आदि और स्वभाव में स्वर्गीय हैं, परन्तु वे पृथ्वी पर पाई जाती हैं, जैसे कि :

- मसीह का अपने लोगों के बीच में आना (यशायाह 53:3; यूहन्ना 1:11)।
- मसीह की मृत्यु और उसका जी उठना (यशायाह 53:5; यूहन्ना 2:19)।
- संसार में पाये जाने वाले अन्य जातियों के लोगों को सुसमाचार सुनाना (यशायाह 49:6; यूहन्ना 1:16-17)।
- और पुनर्जन्म (पवित्रआत्मा का बपतिस्मा) जो बिल्कुल आवश्यक है (व्यवस्थाविवरण 30:6; यहेजकेल 36:25-28; यूहन्ना 1:33; यूहन्ना 3:3-8)।

पुराने नियम में परमेश्वर पहले से ही पृथ्वी की बातों के विषय में कह चुका था, "मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूरतों से शुद्ध करूँगा। मैं तुम को नया मन दूँगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा, और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुम को मांस का हृदय दूँगा। और मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूँगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे" (यहेजकेल 36:25-27)। नये सिरे से जन्म लेना पृथ्वी पर मानव अनुभव के क्षेत्र के भीतर होता है। इसलिए जो कोई व्यक्ति पुराने नियम को पढ़ता है और परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए अपनी स्वभाविक असमर्थता को दर्शाता है, वह व्यक्ति नये सिरे से जन्म लेने की आवश्यकता को समझ चुका है।

हालाँकि पवित्र आत्मा द्वारा लोगों के नये सिरे से जन्म लेने के विषय में स्पष्टरूप से पुराने नियम में और नये नियम में यीशु द्वारा सिखाया गया है, फिर भी अधिकांश यहूदियों ने इसे अस्वीकार कर दिया। नीकुदेमुस और उसके जैसे लोग सोचते थे कि "पृथ्वी की ये बातें" अविश्वसनीय थीं। तो जब यीशु ने "स्वर्गीय बातों" के विषय में बात की तो वे इन बातों पर विश्वास कैसे करते?

स्वर्गीय बातें

जब तक की स्वर्गीय बातें मसीह द्वारा प्रगट न की जाएँ तब तक वे बातें मनुष्य के ज्ञान से बाहर (परे) रहती हैं। "कोई पिता को नहीं जानता, केवल पुत्र और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे" (मत्ती 11:25-27)। केवल परमेश्वर का पुत्र हमेशा से ही परमेश्वर की उपस्थिति में रहा है और स्वर्ग में लिए गए सभी निर्णयों को जानता है। कोई भी व्यक्ति स्वर्गीय बातों के विषय में जानने के लिए स्वर्ग पर नहीं चढ़ा। केवल यीशु मसीह स्वर्ग से उतरा (भेजा गया) और वह ही स्वर्गीय बातों को जानता और उन्हें प्रगट भी करता है जैसे कि :

- परमेश्वर की प्रकृति (स्वभाव) (मत्ती 11:27)।
- परमेश्वर की स्वर्गीय योजना अपने लोगों को बचाने के लिए है, केवल यहूदियों को ही इस बात पर विश्वास नहीं, बल्कि संसार में हर देश के गैर-यहूदियों का भी यही मानना है (यूहन्ना 3:13-18)।
- परमेश्वर की स्वर्गीय योजना यह है कि अपने पुत्र, यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा उन्हें बचाये।

"स्वर्गीय बातें" मनुष्य की पहुँच से, उनके ज्ञान से या उनकी कल्पना से, पूरी तरह से परे हैं, जब तक की वे मनुष्य के सामने प्रगट न की जाएँ। परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा कि वह कौन है (यूहन्ना 1:18)। कोई भी व्यक्ति उद्धार की परमेश्वर की योजना को समझ नहीं सकता (1 कुरिन्थियों 2:7-10)। यीशु मसीह न केवल परमेश्वर की स्वर्गीय योजनाओं को प्रगट करता है बल्कि उन्हें पूरा भी करता है (प्रकाशितवाक्य 5:1-5)।

5. यूहन्ना 14:1-3 - अपने चेलों के लिए एक जगह तैयार करने के लिए स्वर्ग पर चढ़ा।

यीशु मसीह अपने चेलों के लिए एक जगह तैयार करने के लिए स्वर्ग पर पर चढ़ा।

जब यीशु ने यह कहा कि वह एक ऐसे स्थान पर जा रहा है जहाँ उसके चेले नहीं आ सकते (स्वर्ग में उसका

[1] Greek: κατεβη εις τα κατωτερα [μερη] της γης + αναβας υπερανω παντων των ουρανων

स्वर्गारोहण), तब वे व्याकुल हो गए। वे *दु:खी* थे क्योंकि यीशु मसीह ने कहा था कि वह उन्हें छोड़कर जाने वाला है। वे *शर्मिन्दा* थे क्योंकि वे इस बात पर आपस में झगड़ते थे कि हम में से बड़ा कौन है। वे *उलझन* में थे क्योंकि यीशु ने यह भविष्यद्वाणी की थी कि उनमें से एक उसे धोखा देगा, दूसरा उसका इन्कार करेगा और बाकी सब भटक जाएँगे। उनका विश्वास *डगमगाया* हुआ था क्योंकि वे शायद यह सोचते थे कि मसीह को धोखा देना कैसे सम्भव है। एक तरफ वे यीशु से प्यार भी करते थे और दूसरी तरफ यह भी आशा रखते थे कि चीज़ें बदल जाएँगी। उनका विश्वास परखा गया। यही कारण है कि यीशु ने प्रोत्साहित किया "परमेश्वर और मुझ पर विश्वास करते रहो।"

यीशु ने कहा कि वह अपने चेलों के लिए जगह तैयार करने जा रहा था। मसीह के दूसरे आगमन से पहले (भजन 33:13-14; यशायाह 63:15) और *नई पृथ्वी* पर दूसरे आगमन के बाद (यशायाह 65:16-17; प्रकाशितवाक्य 21:1-3) "परमेश्वर का निवास-स्थान" *स्वर्ग* है। "कमरे" शब्द निवास-स्थान को दर्शाते हैं। "जगह" शब्द उस स्थान को दर्शाता है जहाँ मसीही लोग निवास करेंगे, उनकी स्थिति या राज्य और उनका अन्तिम गंतव्य होगा। यीशु की मृत्यु के द्वारा यह सम्भव हो पाया कि उसके चेले अनन्तकाल के लिए उसके साथ रह सकें। अपने पुनरूत्थान के द्वारा वह अपने चेलों को अनन्तकाल के लिए तैयार करता है। और अपने स्वर्गारोहण के द्वारा वह अनन्तकाल की उस जगह को अपने चेलों के लिए तैयार करता है।

वह वापस आयेगा और अपने साथ रहने के लिए उनको ले जायेगा। यीशु की प्राथमिक सोच एक विश्वासी की शारीरिक मृत्यु के विषय में नहीं थी, परन्तु वह अपने दूसरे आगमन के विषय में सोच रहा था। अपने दूसरे आगमन पर वह विश्वासियों का स्वागत करेगा (1 थिस्सलुनीकियों 4:13-17)। जैसे वे एक-दूसरे को गले लगाते थे और एक-दूसरे की आँखों में देखते थे। यही कारण है कि उसका स्वर्गारोहण एक आपदा नहीं बल्कि एक आशा है (तुलना करें - यूहन्ना 16:7)!

यह पद्यांश एक विश्वासी की शारीरिक मृत्यु पर भी लागू किया जा सकता है क्योंकि उसकी आत्मा का भी स्वागत किया जायेगा (फिलिप्पियों 1:21-23)। यह एक जीवित आशा (उम्मीद) है जो एक विश्वासी को यीशु मसीह पर विश्वास जारी रखने के लिए प्रेरित करती है!

6. यूहन्ना 16:7 - अपने चेलों पर पवित्र आत्मा उण्डेलने के लिए स्वर्ग पर चढ़ा।

यीशु मसीह अपने चेलों पर पवित्र आत्मा उण्डेलने के लिए स्वर्ग पर चढ़ा।

यीशु ने कहा कि वह उनके लाभ के लिए उनसे दूर जा रहा था (अर्थात् वह स्वर्ग पर चढ़ जायेगा) क्योंकि तभी पवित्र आत्मा उनके "समक्ष आयेगा" (इब्रानी में : प्रोस)। यीशु ने उनसे पहले से ही कह दिया था कि यह बात उनके लाभ (फ़ायदे) के लिए थी कि वह उनके बीच से जा रहा था, क्योंकि वह उनके लिए जगह तैयार करने जा रहा था (यूहन्ना 14:2,28)। वह उन्हें और भी अधिक बड़े काम करने की सामर्थ्य देगा (यूहन्ना 14:12)। वह उन्हें परमेश्वर पिता और पुत्र के बीच सम्बन्धों के विषय में गहन समझ प्रदान करेगा (यूहन्ना 14:20)। और वह पहले से भी अधिक उनके समीप आयेगा, क्योंकि वह न केवल उन लोगों के "साथ" होगा, बल्कि अपनी आत्मा के द्वारा उनके "अन्दर" वास करेगा (यूहन्ना 14:16,17,28)! इसलिए अपने चेलों के सामने से प्रत्यक्ष रूप में चले जाना दु:खद बात नहीं, बल्कि एक बड़े लाभ और विजय की बात थी!

लेकिन इस से पहले कि यह सम्भव हो पाता, यीशु का क्रूस पर मरना और अपने लोगों के उद्धार के लिए जी उठना अभी तक बाकी था। उद्धार को प्राप्त करने के अलावा ऐसी कोई बात नहीं थी जो उन्हें बचा सकती थी। इसलिए उसका सर्वप्रथम क्रूस पर मरना और मृतको में से जी उठना अनिवार्य था। स्वर्गारोहण और पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद ही पवित्र आत्मा के द्वारा यीशु विश्वासियों के हृदयों और जीवनों में उद्धार के महत्व को लागू करेगा!

अपने *प्रत्यक्ष* और *सीमित मनुष्यत्व* में चेलों के पास से चले जाने के बिना, पवित्र आत्मा के रूप में उसकी उनके पास *अप्रत्यक्ष रूप* में वापसी नहीं हो सकती थी। अपने जन्म के समय, वह अदृश्य परमेश्वर को प्रगट करने के लिए और उनके पापों के प्रायश्चित के लिए पृथ्वी पर अपने प्रत्यक्ष मानव स्वभाव में आया। पवित्र आत्मा के उण्डेलने पर, वह पृथ्वी पर अपने अदृश्य ईश्वरीय स्वभाव (पवित्र आत्मा) में समस्त संसार में और पूरे इतिहास में विश्वासियों के जीवन के उद्धार के लिए अपने कार्य को लागू करने के लिए लौट आयेगा (तुलना करें - रोमियों अध्याय 8; गलातियों 4:4-7)!

उद्धार के इस कार्य में परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के बीच सम्पूर्ण सामंजस्य है। परमेश्वर पिता ने आत्मा को

भेजा (यूहन्ना 14:26), परमेश्वर के पुत्र ने आत्मा को भेजा (यूहन्ना 15:26; 16:7) और आत्मा गया! आत्मा का समस्त संसार में (यूहन्ना 16:8-11) और कलीसिया पर (इफिसियों 2:22) अद्‌भुत प्रभाव होगा।

7. यूहन्ना 20:17 - अपने चेलों के साथ निरन्तर सम्बन्ध बनाये रखने के लिए स्वर्ग पर चढ़ा।

यीशु मसीह अपने चेलों के साथ पृथ्वी पर निरन्तर सम्बन्ध बनाये रखने के लिए स्वर्ग पर चढ़ा।

मरियम मगदलीनी यीशु मसीह के पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण की पहली गवाह बनी। थोड़ी देर बाद यीशु ने अन्य स्त्रियों को जो हुआ था वह बताने के लिए कहा और यह कहा कि वह गलील में उनसे मिलेगा (मत्ती 28:7), उसने मरियम मगदलीनी को चेलों को उद्धार के इतिहास में हुई इस घटना के बारे में बताने के लिए कहा, जो कि उसके स्वर्गारोहण के विषय में थी!

यीशु ने भविष्यद्वाणी की थी, कि वह स्वर्ग में अपने पिता के पास जा रहा था और इसलिए विश्वासियों का यीशु के साथ पहले जैसा सम्बन्ध नहीं रह पाएगा। यीशु की मृत्यु से पहले मरियम मगदलीनी ने बहुत समय तक यीशु का उसके चेलों के साथ संगति का अनुभव किया था। मृतकों में से यीशु के पुनरूत्थान के बाद उन्होंने यह मान लिया था कि उनकी यीशु के साथ पहले जैसी संगति फिर से हो सकती थी। इसलिए उसने आराधना के भाव में होकर उसके सामने दण्डवत् किया, जैसा कि दूसरी स्त्रियों ने थोड़ी देर पहले किया था (मत्ती 28:9)। यीशु ने उसे स्वयं को छूने से मना नहीं किया, जैसा कि बाद में उसने थोमा को छूने की इज़ाज़त दी (यूहन्ना 20:27)। परन्तु यीशु ने उससे कहा कि वह उसे ज़्यादा देर तक इस तरह पकड़ी नहीं रह सकती (उसको पकड़ना) ऐसा लग रहा था कि वह उसे ऐसा करके उसे जाने से (स्वर्ग में) रोक रही थी।

अपने चेलों के साथ दिन-प्रतिदिन प्रत्यक्ष रूप से साथ रहने की उसकी यह अवधि समाप्त हो गई थी। वह प्रत्यक्ष रूप से प्रगट होगा, अभी एक के लिए, बाद में सबके लिए। यही कारण है कि उसने उससे कहा कि उसे यह नहीं सोचना चाहिए की वह यीशु को इस तरह पकड़ कर (अपने पास रोककर) उसके साथ हमेशा के लिए रह सकती है। वह स्वर्ग में अपने पिता के पास चढ़ने वाला था। इसके बाद पृथ्वी पर यीशु और उसके चेलों के बीच पहले जैसा सम्बन्ध जारी नहीं रह पाया। पृथ्वी पर एक स्थान में यीशु के साथ प्रत्यक्ष रूप में सम्बन्ध बनाने के बजाए, वे पृथ्वी पर हर जगह पवित्र आत्मा के द्वारा उसके साथ अपने सम्बन्ध को बनाए रखेंगे (तुलना करें - रोमियों 8:9-10; 2 कुरिन्थियों 3:16-18; यूहन्ना 14:16-18, 26; यूहन्ना 15:28; यूहन्ना 16:13-15)! आत्मा के द्वारा वे यीशु के साथ निरन्तर संगति में बने रहेंगे। यह संगति कहीं अधिक *फलवन्त* और धन्य होगी, क्योंकि यह पृथ्वी पर अपनी कलीसिया के साथ *स्वर्ग में जी उठने वाले प्रभु* की संगति होगी!

दूसरी ओर यीशु ने अपने और अपने चेलों के बीच में पाये जाने वाले *अन्तर* की ओर बल दिया। जब यीशु ने कहा, "मेरा पिता और तुम्हारा पिता" और "मेरा परमेश्वर और तुम्हारा परमेश्वर" उसने स्पष्टरूप से इन दोनों रिश्तों को अलग किया :

- यीशु मसीह *स्वभाव* से (मनुष्यत्व में) (आध्यात्मिक रूप से, वैज्ञानिक रूप से) परमेश्वर का पुत्र है (यूहन्ना 1:1,18; यूहन्ना 10:30-33)।
- विश्वासी (मसीही) परमेश्वर के *लेपालक* (आत्मिक रूप) पुत्र (और पुत्रियाँ) हैं (यूहन्ना 1:12-13; इफिसियों 1:4-5)।

फिर भी यीशु ने अपनी संगति की *घनिष्ठता* (*निकटता*) पर बल दिया। आत्मिक रूप से परमेश्वर जो यीशु का पिता है, वह चेलों का भी पिता है! यह परमेश्वर और पिता के लिए ही है कि यीशु स्वर्ग पर चढ़ रहा है।

ख. यीशु मसीह के स्वर्गारोहण के आस-पास के घटनाक्रम

1. प्रेरितों के काम की पुस्तक यीशु मसीह के स्वर्गारोहण को सांसारिक दृष्टिकोण से देखती है।

पढ़ें। प्रेरितों के काम 1:3-11; लूका 24:50-53

मृतकों में से जी उठने के बाद यीशु अपने चेलों और अन्य विश्वासियों को 40 दिन तक प्रत्यक्ष रूप से दिखता रहा। एक बार उसने यरूशलेम में अपने चेलों के साथ भोजन भी किया। उसने कहा, "यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिसकी चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो। क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।।।" (लूका 24:50-53)। "परन्तु जब पवित्र

आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे" (प्रेरितों के काम 1:4-8)।

तब यीशु को उनके देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया। बादल ने उसे उनकी आँखों से छिपा लिया। अचानक दो पुरूष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उनके पास आ खड़े हुए और कहने लगे : "हे गलीली पुरूषों, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुमने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।"

यह धारणा है कि उसके बाद यीशु मसीह का शरीर विसरित हो गया या उसने ईश्वरीय रूप ग्रहण कर लिया, जिससे की वह सर्वव्यापी हो गया, इसका बाइबल में कहीं ज़िक्र नहीं पाया जाता। यीशु मसीह का महिमान्वित शरीर कोई भूत नहीं था, बल्कि शारीरिक शरीर (मांस और हड्डियों) का था जिसे स्पर्श किया जा सकता था (लूका 24:37-40) और वह अभी भी भोजन खा सकता था (लूका 24:41-43), लेकिन वह "(पापी) देह और (नश्वर) लहू" नहीं था (1 कुरिन्थियों 15:50)। बाइबल जो सिखाती है वह निम्नलिखित है :

- यीशु मसीह को "परमेश्वर और उसके सिंहासन के पास उठाकर पहुँचा दिया गया" (प्रकाशितवाक्य 12:5)।
- वह परमेश्वर पिता की दाहिनी ओर बैठा है (मरकुस 16:19; इफिसियों 1:20)।
- जिस रीति से उसके चेलों ने उसे स्वर्ग को जाते देखा उसी रीति से वह फिर आयेगा (प्ररितों के काम 1:11)।

तब उसके चेले जैतून के पहाड़ से यरूशलेम को लौट आए और अन्य विश्वासियों के साथ ऊपरी कोठरी में एक चित्त होकर प्रार्थना में लगे रहे (प्रेरितों के काम 1:14)। प्रकाशितवाक्य 5:13 में हम देखते हैं, "फिर मैंने स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, और समुद्र की सब सृजी हुई वस्तुओं को, और सब कुछ को जो उन में हैं, यह कहते सुना, कि जो सिंहासन पर बैठा है, उसका, और मेम्ने का धन्यवाद, और आदर, और महिमा, और राज्य, युगानुयुग रहे।"

2. प्रकाशितवाक्य की पुस्तक यीशु मसीह के स्वर्गारोहण को स्वर्गीय दृष्टि से देखती है।

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 5:1-13

प्रकाशितवाक्य अध्याय 5 का विषय है : "परमेश्वर सिंहासन पर विराजमान मेम्ने के द्वारा अपनी अनन्त योजना को पूरा करता है।"

(1) स्वर्ग में पुस्तक का संदेश (प्रकाशितवाक्य 5:1)।

परमेश्वर के पास स्वर्ग में एक पुस्तक है! यह पुस्तक एक सूची के रूप में पाई जाती है। पृथ्वी पर कोई भी धार्मिक पुस्तक इस पुस्तक की प्रतिलिपि नहीं है, क्योंकि यह मुहरबन्द है। इस पुस्तक के बारे में इतिहास में किसी भी भविष्यद्वक्ता को नहीं बताया गया है। इस दुनिया के इतिहास में केवल एक ही है जो मुहरों को *तोड़ने* और पुस्तक को *खोलने* के योग्य है! वही एकमात्र ऐसा है जो अपनी बातों को *प्रगट* करने और उन्हें *पूरा* करने में सक्षम है! वह व्यक्ति यीशु मसीह है, क्योंकि केवल वह ही है जो पापों के प्रायश्चित के लिए मर गया था और केवल उसे ही मृतकों में से जिलाया गया। केवल वही है जो हमेशा के लिए रहता है! सभी अन्य भविष्यद्वक्ता अपनी कब्रों में अभी तक मृत पाये जाते हैं। केवल वह स्वर्ग से उतर आया था, केवल उसे ही जिलाया गया था और केवल वह ही स्वर्ग में चढ़ गया था।

स्वर्ग में यीशु मसीह के स्वर्गारोहण और सिंहासन को प्रतिकात्मक रूप से चित्रित किया गया है, क्योंकि मेम्ना सिंहासन पर परमेश्वर पिता के हाथ से पुस्तक को ग्रहण करता है।

दोनों तरफ लिखी गई पुस्तक में संसार के इतिहास और संसार के भीतर कलीसिया के इतिहास के विषय में परमेश्वर के निर्णय पाये जाते हैं। इसमें अनदेखी योजना और परमेश्वर का उद्देश्य शामिल है जो "अनन्तकाल" (इब्रानियों 9:26; यूहन्ना 11;24) में उद्धार के इतिहास में ऐतिहासिक घटनाएँ बन चुकी हैं, जो कि नये नियम में उसके पहले आगमन से लेकर दूसरे आगमन तक के विषय में है। ये महान और सभी निर्धारित ऐतिहासिक घटनाएँ जो कि परमेश्वर के राज्य के आने की घोषणा करती हैं, अत्याधुनिक (भव्य और हिसंक) घटनाएँ है, क्योंकि वे परमेश्वर के उद्धार की अनन्त योजना (अपने लोगों के लिए) और निर्णय (अपने शत्रुओं) को प्रगट और पूरा करती हैं। जगत के केन्द्र में अपने सिंहासन पर विराजमान परमेश्वर, इस पृथ्वी के लिए और अपने लोगों के लिए यीशु मसीह के द्वारा अपनी अनन्त योजना को पूरा करता है। यीशु मसीह परमेश्वर के उद्धार और न्याय की अनन्त योजना को प्रगट और पूरा करता है।

पृथ्वी पर पाई जाने वाली अन्य सभी पुस्तकों की तुलना में यह पुस्तक पूरी तरह से अलग है! पृथ्वी पर धर्मनिरपेक्ष या

धार्मिक पुस्तकों में यह दर्ज किया गया कि पिछले कुछ समय में पृथ्वी पर कौन सी घटनाएँ हुई हैं। वे कुछ धर्मनिरपेक्ष या धार्मिक लोगों के जीवन, उनके शब्दों और उनकी उपलब्धियों और उनके द्वारा लड़े गए युद्धों को उजागर करती हैं। लेकिन स्वर्ग में इस पुस्तक को खोलने और पढ़ने के द्वारा *पृथ्वी पर होने वाली घटनाओं को कार्यशील किया जाता है।* यह वह प्रगट नहीं करता की पहले क्या हुआ, लेकिन यह ये प्रगट करता है कि जल्द ही क्या होने वाला है (प्रकाशितवाक्य 1:3)! जिस समय यीशु मसीह ने मुहर तोड़ी, उस समय उस मुहर के नीचे की पुस्तक के शब्द प्रगट हुए और पृथ्वी पर मनुष्य के इतिहास में होने वाली घटनाओं की शुरूआत हुई। "खुलना" स्वर्ग में पाई जाने वाली पुस्तक वह है, जो कि वास्तव में उसके पहले आगमन से दूसरे आगमन तक की सभी घटनाओं और पृथ्वी के लोगों के विषय में बताती है।

परमेश्वर ने सृष्टि की रचना के समय जो किया, यीशु मसीह अन्त में वही करता है! परमेश्वर के एक शब्द बोलने के द्वारा अनुभविक (दृश्यमान और मापने वाली सामग्री) चीज़ें जो अस्तित्व में नहीं थीं, वे अस्तित्व में आईं (उत्पत्ति 1:3; भजन 33:6; रोमियों 4:17; इब्रानियों 11:3)। यीशु मसीह मुहर को खोलकर इस पुस्तक में पाई जाने वाली उद्धार और न्याय के इतिहास की घटनाओं को अस्तित्व में लाता है। जिस समय मसीह मुहर को तोड़ता है, वह उसकी बातों को प्रगट करता हैं और उन्हें उजागर करता है (प्रकाशितवाक्य 6)।

(2) पुस्तक की मुहरों को तोड़ने का सन्देश (प्रकाशितवाक्य 5:2-4)।

समस्त जगत में लम्बे समय तक ऐसा कोई भी नहीं पाया गया जो इस पुस्तक की मुहर को खोलने, उसकी बातों को प्रगट करने और उन्हें कार्यशील करने के योग्य हो। जब तक की पुस्तक की मुहर बन्द रही, तब तक सृजित वस्तुएँ और पृथ्वी की ऐतिहासिक घटनाएँ स्थिर हो गई और उनमें कोई भी प्रगति नहीं हुई!

यदि पुस्तक की मुहरें बन्द रहती, तो कलीसियाओं की स्थिति में कोई बदलाव सम्भव नहीं होता। इफिसुस की कलीसिया एक मृतक रूढ़ीवादी कलीसिया बनी रहती जो सिर्फ मसीह सच्चाई पर चलती, लेकिन उनमें मसीही प्रेम का अभाव होता (प्रकाशितवाक्य 2:1-7)। सरदीस की कलीसिया अन्य मतों द्वारा एक सताई हुई कलीसिया ही रहती (प्रकाशितवाक्य 3:1-6)। लौदीकिया की कलीसिया हमेशा की तरह एक आत्मघातक, भौतिकवाद, समृद्ध और सांसारिक वस्तुओं में बन्धी रहती (प्रकाशितवाक्य 3:14-22)।

जब तक कि मुहरें बन्द रहती हैं, तब तक कलीसियाओं का उत्पीड़न और उनकी प्रताड़नाओं को मिटाया नहीं जा सकता, और अपनी अन्तिम महिमा के लिए वह फलवन्त भी नहीं हो सकती! तब तक पृथ्वी के इतिहास का अन्त होता नहीं दिखाई देता है और कलीसियाओं के संघर्षों को रोका नहीं जा सकता है। फिर सृजित वस्तुएँ और ऐतिहासिक घटनाएँ अपने अंतिम गंतव्य की ओर नहीं बढ़ सकती! पृथ्वी पर होनेवाली घटनाएँ अन्तिम गंतव्य के लिए सीधा मार्ग होने की बजाय वहीं घूमती रहती है! यह तथ्य पृथ्वी पर पाई जाने वाली सभी वस्तुओं को दु:खद बनाता है। यहाँ कोई भी निश्चत लड़ाई नहीं है और न ही उसकी कोई निश्चत जीत है! नये सुधारों के बाद नई विकृति, सांसारिक और मलिनता का पाया जाना शामिल है। छुटकारे के समय में दु:खद और शान्त मृत्यु होगी। कलीसिया चढ़ाव (ऊँची लहरों) और उतार (नीची लहरों) के समय इतिहास का अनुभव करती है। और संसार एक अन्तहीन चक्र के रूप में इतिहास का वर्णन करता है - सबकुछ बार-बार दोहराया जाता है। पृथ्वी[2] पर होने वाली निराशाजनक घटनाओं का कोई अन्त नहीं है।

जब तक मुहरें बन्द रहती है, तब तक शैतान की कोई निश्चित विजय नहीं होती है! वह कुछ विश्वासियों को मृत्यु के समय तक सता सकता है, लेकिन वह उन्हें नाश नहीं कर सकता! वह राष्ट्रों को यीशु मसीह से जुड़ी सभी वस्तुओं से ईर्ष्या करने के लिए उकसाता है, लेकिन वह यीशु मसीह के नाम को मिटाने में सफल नहीं होता है! इसके अलावा शैतान और उसके सहयोगियों ने उतार-चढ़ाव के समय इतिहास का अनुभव किया है।

न तो कलीसिया और न ही शैतान पुस्तक की मुहरों को तोड़ सकते हैं। न ही वे विजय प्राप्त करने में सक्षम हो सकते है! जब कलीसिया पृथ्वी पर इस संघर्ष का कोई अन्त नहीं देखती, तब वह निराश हो जाती है और खुद को सामर्थ्यहीन महसूस करने लगती है। जब कोई पुस्तक की मुहरों को तोड़ने में सक्षम नहीं होता है तो पृथ्वी पर होने वाली घटनाएँ अन्तहीन स्वप्न के रूप में बदल जाती हैं।

इस संसार का इतिहास लगातार असमंजस की कगार पर क्यों खड़ा रहता है? संघर्ष की यह नीरसता और इसका अन्तहीन चक्र क्यों कभी नहीं टूटता? हम इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकते, लेकिन हम यह जानते हैं कि जीवन के कुछ छिपे हुए रहस्य हैं (व्यवस्थाविवरण 29:29; यशायाह 55:8-9) और इस संसार का इतिहास राज्य पाने के लिए एक संघर्ष से कही ज़्यादा है! यह कोई नहीं कह सकता कि अगर परमेश्वर चाहेगा, तभी वह शैतान को हरा सकता है, और इस संघर्ष

को समाप्त कर सकता है। क्योंकि शैतान का भी एक निश्चित दायरा है। पाप में मनुष्य के पतन के बाद से, एक विशेष तरीक़े के द्वारा बुरा संसार (मसीह के बिना संसार) शैतान के अधीन हो गया है। "समस्त संसार (मसीह के बिना) दुष्ट के वश में पड़ा है" (1 यूहन्ना 5:19)। शैतान को "इस संसार का (बुराई का) सरदार" (यूहन्ना 12:31) कहा जाता है। वह समस्त (बुरे) संसार को भरमाता है (प्रकाशितवाक्य 12:9)। और उसे "इस युग का ईश्वर कहा जाता है जिसने अविश्वासियों की बुद्धि को अन्धा कर दिया है" (2 कुरिन्थियों 4:4)। यही कारण है कि इस धरती पर होने वाली घटनाएँ इतनी पेचिदा, भयावह और भयानक हैं। ऐसा लगता है कि संसार बहुत आकर्षक है और ऐतिहासिक घटनाएँ इसी आकर्षण में बन्धी हुई हैं।

इस पृथ्वी पर होने वाली घटनाओं को केवल इस पुस्तक की मुहरों को तोड़कर ही एक निश्चित अन्त तक लाया जा सकता है! मुहरों को तोड़ने और पुस्तक को खोलने से यीशु मसीह सारे भ्रमों को मिटा देता है और इस संसार की वस्तुओं को उनके वास्तविक रूप में लाता है।

इस संसार के हाकिम हमेशा अपनी आर्थिक और सैन्य क्षमता और शक्तिशाली संघर्षों के संदर्भ में ही सोचते हैं। लेकिन परमेश्वर की सोच इन सबसे कहीं अलग है!

सिंह, मेम्ने और दाऊद के मूल का सन्देश (प्रकाशितवाक्य 5:5-7)।

एक बलवन्त स्वर्गदूत ने यह घोषणा की, "इस पुस्तक को खोलने और मुहरें तोड़ने के योग्य कौन है?" केवल एक ही है जो इस पुस्तक को खोल सकता है परन्तु अभी वह ऐसा नहीं करेगा। ऐसा लगता है कि वह यह देखने की प्रतीक्षा कर रहा है कि क्या कोई और है जो उसे इस महान कार्य को करने की चुनौति दे सकता है। परन्तु स्वर्ग में या पृथ्वी पर या आत्माओं के संसार में (दुष्टात्माओं) ऐसा कोई भी नहीं जो इस पुस्तक को खोले या इसे देख भी सके। इस संसार के इतिहास में ऐसी कोई दुष्टात्मा, कोई बलवन्त राजनीतिक राजा और कोई धार्मिक भविष्यद्वक्ता जिसने इस पुस्तक को खोलने के लिए अपने कदम को बढ़ाया हो!

यह बिल्कुल स्पष्ट है कि यीशु मसीह (यहूदा का सिंह, दाऊद का मूल और परमेश्वर का मेम्ना) एकमात्र ऐसा है जो मुहरों को तोड़ सकता है (यूहन्ना 14:6; प्रेरितों के काम 4:12; 1 तीमुथियुस 2:5)! अनगिनत स्वर्गदूतों में से जो स्वर्ग में परमेश्वर की सेवा करते हैं और चार जीवित प्राणियों में से जो परमेश्वर की सृष्टि का प्रतिनिधित्व करते हैं, उनसे एक भी नहीं है, लेकिन कलीसिया का प्रतिनिधित्व करने वाले एक पुरूष को उत्तर देने का विशेष अधिकार दिया गया है। यूहन्ना को यह मालूम और महसूस होना चाहिए था कि वह एक द्वीप पर कई प्रश्नों के साथ अकेला नहीं खड़ा है। यूहन्ना परमेश्वर के विश्वव्यापी समुदाय के विश्वासियों का हिस्सा है, एक ऐसी कलीसिया जिसने परमेश्वर के वचन को ग्रहण किया है। उस शब्द से यूहन्ना दैनिक समस्याओं का उत्तर दे सकता है जिनका सामना कलीसिया करती है। "यहूदा के गोत्र का सिंह, दाऊद का मूल विजयी हुआ है। वह पुस्तक और उसकी सातों मुहरें खोलने में सक्षम हैं।"

यीशु मसीह परमेश्वर के लोगों का सिंह है जिसे पुराने नियम में "यहूदा" (उत्पत्ति 49:10; इब्रानियों 7:14), नये नियम में "इस्राएल" (गलातियों 6:16) और दोनों नियमों में "कलीसिया" (इब्रानी में : ईकलीसिया) (भजन 107:32; 2 इतिहास 29:28; मत्ती 16:18) कहा जाता है। वह एक ऐसा "सिंह" नहीं है जिसने संसार को सांसारिक सेना द्वारा या धार्मिक "पवित्र युद्धों" द्वारा जीता हो। उसका सामर्थ्य उसके मौलिक रूप को प्रस्तुत करता है। वह सिंह है क्योंकि वह वो मेम्ना है जिसने क्रूस पर बलिदान होने के लिए स्वयं को दे दिया था जो उस संसार के लोगों के पापों के प्रायश्चित के बलिदान के रूप में स्वीकार किया जाता था। इस युग के शासकों में से कोई भी परमेश्वर की छुपी हुई समझ को जान नहीं पा रहा था, क्योंकि यदि उन्होंने समझा होता, तो वे मसीह को क्रूस पर नहीं चढ़ाते (तुलना करें - 1 कुरिन्थियों 2:8)। इसके अलावा यीशु ने अपने ज्ञान का प्रमाण दिया : "जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है" (यूहन्ना 12:24)।

परमेश्वर की दृष्टि में वास्तविक महानता उन घमण्डी धार्मिक अगुवे या उग्र योद्धा और अजेय नायक में नहीं है जो अपने राजनीतिक, कानूनी और धार्मिक भूखण्डों और अपने धन और सेना के बल द्वारा लोगों और राष्ट्रों पर विजय प्राप्त करते हैं। इस संसार के इतिहास को युद्ध और आतंकवादियों द्वारा उत्पीड़न, या रिश्वतखोरी और धार्मिक असत्य द्वारा, अपने अन्तिम गंतव्य तक नहीं लाया जायेगा। इस संसार के इतिहास को पूरी तरह से खोला जायेगा और उसके अंतिम महिमान्वित गंतव्य (नई पृथ्वी) तक लाया जायेगा, जो कि वह परमेश्वर है जिसने स्वयं को शून्य कर दिया और मनुष्यत्व को पहन लिया। फिर उसने स्वयं को और भी दीन किया और मनुष्य का दास होने के लिए खुद को दे दिया। अन्त में

[2] यह हिन्दूवादी और बौद्धिक धारणा है।

उसने स्वयं को क्रूस पर चढ़ाया और पापों के प्रायश्चित के लिए बलिदान का मेम्ना बन गया (फिलिप्पियों 2:5-8)। यीशु मसीह ही एकमात्र सिंह (एकमात्र राजा) है, क्योंकि केवल वह ही मेम्ना (प्रायश्चित का बलिदान) बन गया।

यीशु मसीह दाऊद का "मूल" और "वंश" है (प्रकाशितवाक्य 22:16)। पुराने नियम में ऐतिहासिक राजा दाऊद परमेश्वर के लोगों का राजा था। परन्तु पुराने नियम में सारी भविष्यद्वाणियाँ असली राजा, यीशु मसीह की ओर संकेत करती है, जो परमेश्वर का वास्तविक राज्य स्थापित करेगा। और इतिहास में परमेश्वर के सभी लोगों का राजा होगा। यीशु मसीह दाऊद राजा की सनातन ईश्वरीय उत्पत्ति (मूल) और उसकी मानवजाति (वंश) दोनों ही है।

इस सृष्टि में और मानव इतिहास में यीशु मसीह ही एकमात्र ऐसा हैं जो संसार में होने वाली घटनाओं के रहस्यमय चमत्कार और इस भ्रम को कि सारी वस्तुएँ और सब लोग वास्तविक रूप से कुछ और हैं, तोड़ सकता है। परमेश्वर केवल यीशु मसीह के हाथों में ही इस पुस्तक को देता है! अन्य सभी हाथों में यह पुस्तक मूर्तिपूजा का एक उद्देश्य बन जाएगी [3]।

(3) क्रूस की कथा (प्रकाशितवाक्य 5:8-12)।

जिस पल यीशु मसीह के हाथों में पुस्तक दी जाती है, उसी पल वही चौबीस प्राचीन (जो स्वर्ग में परमेश्वर की कलीसिया का प्रतिनिधित्व करते हैं) और चार जीवित प्राणी (जो स्वर्ग में परमेश्वर की सृष्टि का प्रतिनिधित्व करते हैं) नीचे गिरकर दण्डवत् करते हैं, पुस्तक की आराधना करने के लिए नहीं बल्कि उसकी आराधना करने के लिए जो उस मुहर को खोलने के योग्य है। मसीही लोग स्वर्ग में उस पुस्तक की आराधना नहीं करते, परन्तु उसकी आराधना करते हैं जो इस पुस्तक की बातों को प्रगट और पूरा करता है! मेम्ना पुस्तक लेने और उसकी मुहरों को खोलने के योग्य है, क्योंकि केवल उसका वध हुआ और अपने लहू से उसने हर एक कुल और हर भाषा में से लोगों को मोल लिया है (प्रकाशितवाक्य 5:9-10)।

यीशु मसीह के पहले आगमन की मृत्यु और पुनरुत्थान सभी मानवीय इतिहास का आधार और केंद्र है। (1 कुरिन्थियों 15:3-4; तुलना करें - 1:22; 2:23-24; 3:13-15; 4:10; 5:30; 7:52-56; 8:32; 10:39-40; 13:28-31; 17:31; 26:23)! स्वर्ग में, धरती पर और नरक की सारी शक्तियाँ मानव इतिहास में इस एक घटना के आस-पास एकत्रित हुई हैं और इसके परिणाम के लिए लड़ती हैं। सृष्टि की रचना के बाद से सम्पूर्ण इतिहास क्रूस और जी उठने की ओर संकेत करता है। मसीह के पहले आगमन के बाद सम्पूर्ण इतिहास क्रूस की ओर संकेत करता है और मसीह का जी उठना उसके दूसरे आगमन की ओर संकेत करता है। मानव इतिहास की इस एक घटना के द्वारा परमेश्वर और मसीह ने निर्णायक जय प्राप्त की। क्रूस पर शैतान और उसकी नरक की शक्तियों को और पृथ्वी पर उसके अनुयायियों को निर्णायक हार का सामना करना पड़ा! अपने पहले आगमन पर मसीह ने शैतान को बान्ध दिया और अपना राज्य स्थापित किया (मत्ती 12:28-30)! प्रत्येक व्यक्ति को यह चुनाव करना होगा कि वह "यीशु के साथ" है या "यीशु के विरुद्ध" है। इसके बीच का और कोई रास्ता नहीं है!

चार जीवित प्राणी, जो प्रकृति की शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, हमें पृथ्वी पर आये अन्धकार, भूडोल और कब्रों के खुलने की याद दिलाते हैं (मत्ती 27:45-53)। परमेश्वर की सृष्टि को भी यह पता है कि इसका अन्त पूरी तरह से इस एक दिन (मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान) से जुड़ा हुआ है और वह आशाभरी दृष्टि से यह उम्मीद करती है कि वह आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी (रोमियों 8:19-21)!

चौबीस प्राचीन, जो पुराने नियम में परमेश्वर को और नए नियम में स्वर्ग के लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं, हमें उन लोगों की याद दिलाते हैं जो क्रूस से डरते और उससे दूर भागते हैं। परमेश्वर के लोग (कलीसिया) भविष्यद्वक्ताओं की बातों और व्यवस्था को पूरा होते हुए देखेंगे। व्यवस्था ने पशुओं के बलिदान के बारे में सिखाया था (इब्रानियों 9:12-14) और भविष्यद्वक्ताओं ने प्रभु के दास की भविष्यद्वाणी की थी कि उसका मेम्ने के रूप में वध किया जाएगा और हमारे

पापों के लिए उसे कुचला जाएगा (यशायाह 53:5,7)। और वे ये गीत गाते हैं कि उसने अपने लहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है (प्रकाशितवाक्य 5:9)।

---

[3] यह इस्लामिक धारणा है।

स्वर्ग में स्वर्गदूत हमेशा उस उद्धार के संदेश की एक झलक पाने के लिए प्रयासरत रहते थे जो कलीसिया (विश्वासियों)

को सौंपा गया था (1 पतरस 1:9-12)। स्वर्गदूतों ने यीशु मसीह के जन्म की घोषणा की (लूका 1:26-37 2:8-14)। उन्होंने यीशु मसीह की सेवा की (मत्ती 4:11)। उन्होंने उस समय यीशु मसीह को सामर्थ्य दी जब वह अपनी मृत्यु से पहले व्याकुल होकर प्रार्थना कर रहा था (लूका 22:43)। वे उसकी मृत्यु के उस भय के गवाह थे लेकिन उन्हें पुनरुत्थान की खुशी भी थी इसलिए उन्होंने लोगों को यह प्रगट करने के लिए कि यीशु मसीह जो मर गया था वह हमेशा के लिए जीवित है, उस कब्र का पत्थर लुढ़का दिया (प्रकाशितवाक्य 1:18; मत्ती 28:5-7)। वे उसकी प्रशंसा के गीत गाते हैं। क्रूस पर अपना लहू बहाने के द्वारा परमेश्वर ने न केवल पृथ्वी पर सारी वस्तुओं का बल्कि स्वर्ग में भी सभी वस्तुओं का अपने आप से मेल करवा लिया था (कुलुस्सियों 1:19 -20)। पाप में गिरने से स्वर्ग में स्वर्गदूतों पर भी असर पड़ा था लेकिन क्रूस पर मसीह की मृत्यु के माध्यम से स्वर्गदूतों के संसार को भी टूटने से बचा लिया गया।

(4) प्रकाशितवाक्य का यह संदेश आरम्भ से लेकर वर्तमान तक और अंत के समय तक की घटनाओं के बारे में है (प्रकाशितवाक्य 5: 13-14)।

प्रकाशितवाक्य 4:1-11 में दिए गए दर्शन अनन्तकाल में अपने सिंहासन पर शान्तिपूर्ण रीति से बैठे परमेश्वर के बारे में बताते है। परमेश्वर मध्य में है। लेकिन प्रकाशितवाक्य 5:1-12 में पाया जाने वाला दर्शन अपने समय पर मसीह के द्वारा किये जाने वाले कार्य के बारे में बात करता है। अब मसीह मध्य में है। परमेश्वर की परिपूर्णता मसीह में वास करती है और परमेश्वर, जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वो मसीह में एकत्र करता है (कुलुस्सियों 1:19-20; इफिसियों 1:9-10)।

प्रकाशितवाक्य 5:13-14 में अंतिम दर्शन उसकी महिमा और मेम्ने के बारे में बताता है जो सिंहासन पर *हमेशा-हमेशा* के लिए बैठा है। *एक बार फिर से परमेश्वर मध्य में है*, परन्तु अब वो परमेश्वर है जिसने स्वयं को यीशु मसीह, उसके पहले आगमन, क्रूस पर उसके बलिदान और उद्धार के उसके सम्पूर्ण कार्य में अपने आपको प्रगट किया (1 कुरिन्थियों 15:27-28)!

मसीह के आने से पहले इस संसार की वस्तुएँ आकर्षक लग रही थीं : संसार में पाई जाने वाली वस्तुएँ वैसी नहीं थीं जैसी वे लगती थीं। संसार में पाई जाने वाली वस्तुएँ बदलती हुई नज़र नहीं आ रही थीं। लेकिन मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद, यीशु मसीह के स्वर्गारोहण और सिंहासन पर बैठने के द्वारा इस आकर्षण को तोड़ दिया गया। संसार की वस्तुएँ वैसी ही बनती जा रही हैं जो वे वास्तव में हैं। "जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे; और जो मलिन है, वह मलिन बना रहे; और जो धर्मी है, वह धर्मी बना रहे; और जो पवित्र है, वह पवित्र बना रहे" (प्रकाशितवाक्य 22:11)। और इस संसार का इतिहास अपने अन्तिम गंतव्य की ओर अग्रसर होता है। यह यीशु मसीह ही है जो मुहरों को तोड़कर और पुस्तक को खोलने के द्वारा राज्य करता है। इससे इतिहास की घटनाओं का एक क्रम बनता है जो सृष्टि में सारी वस्तुओं को उनके अंतिम गंतव्य तक ले जायेगा! यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और उसके पहले आगमन के समय सिंहासन पर उसका विराजमान होना, समय और अनन्तकाल को एक साथ लाता है। उसके दूसरे आगमन पर सभी वस्तुओं को अनन्तकाल तक पहुँचाया जाएगा।

"कि उसने अपनी इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार हमें बताया जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था। कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि *जो कुछ स्वर्ग में है*, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ *वह मसीह में एकत्र करे*" (इफिसियों 1:9-10; इब्रानियों 2:8)। "कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है" (फिलिप्पियों 2:10-11)। "और उसके क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा मेल-मिलाप करके, सब वस्तुओं को उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले चाहे वे पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग में की" (कुलुस्सियों 1:20)। *जिस तरह से लोग परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन होंगे, उसमें एक अन्तर है।* पाप करने वाले पापी ही बने रहते हैं परन्तु उन्हें पश्चाताप् करने के लिए विवश किया जता है। वे शान्ति और मेल-मिलाप का स्वागत नहीं करते - इसके लिए उन्हें बाध्य किया जाता है (देखें रोमियों 16:20; 1 कुरिन्थियों 15:24-28; इफिसियों 1:21-22)। सृष्टि स्वेच्छा या बिना इच्छा से प्रभु मसीह के राज्य के तहत लाई जाती है। इसका संदर्भ सार्वभौमिक प्रायश्चित्त या सार्वभौमिक उद्धार की शिक्षा से नहीं है, क्योंकि मानवता का एक हिस्सा परमेश्वर और उसके लोगों का बैरी रहेगा (1 कुरिन्थियों 15:25) और यह भी कि "अनन्त दण्ड" एक अनन्त सत्य ही रहेगा (मत्ती 25:46; प्रकाशितवाक्य 21:8)।

इसलिए समस्त पृथ्वी और सम्पूर्ण जगत और सभी छुड़ाए हुए लोग उसकी रचना और उद्धार के कार्य के कारण, परमेश्वर और मेम्ने की प्रशंसा करते हैं। सभी वस्तुएँ अंतत: परमेश्वर की महिमा करेंगी (रोमियों 11:36)। उसकी इच्छा सब जगह पूरी होगी (प्रकाशितवाक्य 4:11)। सिंहासन राज्य करेगा, अर्थात्, परमेश्वर पिता अपने पुत्र के द्वारा राज्य करेगा। मेम्ना

राज्य करता है, इसलिए कलीसिया को सताव (परीक्षा और अत्याचार) से डरने की आवश्यकता नहीं है।

ग. यीशु मसीह के स्वर्गारोहण का हमारे जीवन में महत्व

यीशु मसीह समस्त वस्तुओं और सब पर राज्य करने के लिए सिंहासन पर जा बैठा, इस प्रकार उसने अंतिम चरण में अपने राज्य की स्थापना की।

1. मसीह के स्वर्गारोहण का पहला परिणाम सारी सृष्टि को उसकी पूर्ण विजय की घोषणा करना है।

पढ़ें 1 पतरस 3:18-22 (देखें : नियमावली 6, परिशिष्ट 8 - मृतक पूर्वजों के साथ सम्बन्ध)।

(1) **यीशु मसीह की मृत्यु और जी उठने के द्वारा पापों का प्रायश्चित और परमेश्वर के साथ टूटे हुए सम्बन्ध का मेल-मिलाप (1 पतरस 3:18)।**

यीशु को "देह सहित मार डालने" का मतलब है कि उसे तब मृत्यु दी गयी थी, जब वह अपने निर्बल मानव शरीर में था और उसके ऊपर मानवजाति के पापों का बोझ डाल दिया गया था (रोमियो 1:3)। उसकी मृत्यु के द्वारा, यीशु ने अपने निर्बल मानव स्वभाव को अलग कर दिया और पाप और मृत्यु के साथ हर सम्बन्ध को तोड़ दिया।

यीशु को "आत्मा द्वारा जीवित" करने का अर्थ था कि पवित्र आत्मा द्वारा उसके मानव शरीर को जीवित कर दिया गया और मृतकों में से वह जी उठा। उसके जी उठने के बाद, उसकी पूर्ण देह महिमान्वित हुई और पवित्र आत्मा द्वारा उस पर पूरी तरह से नियंत्रण किया गया (रोमियों 1:4; कुलुस्सियों 2:9)! उसी क्षण से यीशु, अपने मानव स्वभाव के रूप में, अपने मनुष्यत्व में नहीं रह पाया, लेकिन पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से भरकर अपनी महिमान्वित देह में बदल गया। उसी क्षण से, परमेश्वर की महान सामर्थ्य ने यीशु को परमेश्वर की दाहिनी ओर, सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ्य, और प्रभुता, और हर एक नाम के ऊपर बैठाया (मत्ती 28:18; 1 कुरिन्थियों 15:25; इफिसियों 1:20-23; फिलिप्पियों 2:9-11; 1 पतरस 3:22; प्रकाशितवाक्य 1:5)।

(2) **मसीह का जाना और प्रचार करना (1 पतरस 3:19)।**

ग्रीक शब्द स्पष्ट है, "आत्मा में होकर उसने एक बार सब लोगों को (participle, aorist time) सब जगह जाकर प्रचार किया।"

ध्यान दें :

- उसका जाना पुनरुथान से *पहले नहीं*, परन्तु पुनरुथान के *बाद* था।
- उसका जाना और प्रचार करना *मानवीय आत्मा में नहीं*, बल्कि *महिमान्वित (जी उठी) देह* में था।
- उसका जाना *अधोलोक* में नहीं था, परन्तु स्वर्ग तक परमेश्वर की दाहिनी ओर जाना था जहाँ स्वर्गदूत, अधिकार और शक्तियाँ उसके आधीन हैं (1 पतरस 3:22)! यीशु अधोलोक (इब्रानी में: सीओल, ग्रीक में : हेड्स) में नहीं गया जहाँ मृत लोगों की आत्मा रहती हैं, परन्तु ऊपर स्वर्ग में गया, जहाँ परमेश्वर रहता है।
- उसका प्रचार *बाइबल का सुसमाचार नहीं था, बल्कि उसकी विजय का प्रचार था।* उसका स्वर्गारोहण ही उसकी महान विजय का प्रमाण और साथ ही उसकी बातों की घोषणा भी थी।

(3) **कैदी आत्माएँ (1 पतरस 3:19)।**

इस प्रकार यीशु मसीह का स्वर्गारोहण "कैद में पाई जाने वाली आत्माओं" के लिए उसकी विजय का एकमात्र प्रचार था। ये आत्माएँ उन लोगों की आत्माएँ थी जिन्होंने पुराने नियम में जब नूह ने जहाज बनाया था तब परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं किया था। वे जलप्रलय में मारे गए और उनकी आत्माओ को अधोलोक में बन्दी बनाकर रखा गया है। उत्पत्ति 6:5 इस प्रकार कहता है कि वे बुराई करने वाले लोग थे और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता था वह निरन्तर बुरा ही होता था। 2 पतरस 2:5 कहता है कि नूह धार्मिकता का प्रचारक था। नूह ने परमेश्वर के वचन को ग्रहण किया और उसके कहने पर एक जहाज़ का निर्माण किया, इन बुरे लोगों ने उसका मज़ाक उड़ाया और उसके उपदेश का उपहास किया और उसकी चेतावनी को तुच्छ जाना। उन्होंने उसके प्रचार पर विश्वास नहीं किया और जहाज़ के बनाये जाने के आदेश का पालन नहीं किया, जिसे जलप्रलय द्वारा नाश किये जाने के निर्णय के रूप में कई सालों तक याद रखा गया। उन्होंने परमेश्वर की चेतावनी का उल्लंघन किया और फिर भी परमेश्वर संभवत: सौ वर्षों तक धीरज धरकर ठहरा रहा (1 पतरस 3:20; उत्पत्ति 5:32; 6: 3; 7: 6)। परन्तु जब जलप्रलय हुआ तो नूह का विश्वास सही साबित हुआ और बुरे लोगों के अविश्वास का अन्त हुआ (इब्रानियों 11: 6)। मत्ती 24:37-39 के अनुसार, यीशु मसीह यह

सिखाता है कि "नूह के दिनों में रहने वाले लोग" दुनिया के सभी उदासीन और आज्ञा न मानने वाले लोगों का प्रतीक हैं!

इसलिए, स्वर्ग में यीशु मसीह का चढ़ जाना उसकी विजय की घोषणा है, न केवल सभी बुरी शक्तियों पर बल्कि उन सभी अधर्मी और परमेश्वर को न मानने वाले लोगों पर भी, फिर चाहे वे यीशु मसीह के आगमन से पहले पाए जाते थे या बाद में। बाइबल के अन्य तथ्यों से हमें पता चलता है कि मसीह की मृत्यु, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और सिंहासन पर विराजमान होना ही सभी दुष्ट की शक्तियों (इफिसियों 1:20-22), जैसे कि शैतान और उसकी सेना (यूहन्ना 12:31-32 प्रकाशितवाक्य 12:5-9 20:1:37) दुष्टात्माएँ (गिराए गए स्वर्गदूत) (लूका 8:31 कुलुस्सियों 2:15 2 पतरस 2:4 यहूदा 6 प्रकाशितवाक्य 9:1), पृथ्वी के न्यायियों (भजन 2:8-12) और पृथ्वी पर रहने वाले सभी दुष्ट और अधर्मी व्यक्तियों (1 पतरस 3:19) पर विजय की घोषणा है! स्वर्ग में मसीह का चढ़ जाना उसकी अपनी पूर्ण विजय की घोषणा है!

2. स्वर्ग में मसीह के स्वर्गारोहण का दूसरा परिणाम उसके सभी बन्दियों को दिखाना है : एक तरफ उसके छुड़ाए हुए लोग और दूसरी तरफ उसके शत्रु।

पढ़ें इफिसियों 4:7-10; 2 कुरिन्थियों 2:14; कुलुस्सियों 2:15

निम्नलिखित वचन एक ऐसी तस्वीर को उजागर कर रहे हैं जिसमे रोम का राजा अपनी जीत के बाद एक विजयी यात्रा लेकर रोम में प्रवेश कर रहा है। उसने एक युद्ध को जीत लिया है और अब शहर में विजयी यात्रा के साथ अपनी विजय का उत्सव मनाता है। उसके इस यात्रा में युद्ध के रथ, सभी योद्धा, विजय प्राप्त लोग और सारे बन्दी लोग हैं। जैसे-जैसे वह आगे अग्रसर होता जाता है, उस भीड़ को जो उन्हें उत्साहित करने आई है, भेंट प्रदान करता जाता है।

भजन 68:18 में पौलुस अपने शब्दों में यह कहता है, "जब तू ऊँचे पर चढ़ा, तब तू लोगों को बन्धुवाई में ले गया, तू ने मनुष्यों से भेंटें ली।" पुराने नियम में यह परमेश्वर का प्रतीक है, जिसने इस्राएल के आस-पास के देशों में से एक पर विजय प्राप्त की और फिर स्वर्ग में बन्दियों और युद्ध में बची हुई वस्तुओं (जो भेंट में उसे दिए गए) के साथ लौट आया। नए नियम में यह यीशु मसीह का प्रतीक है जो शैतान के ऊपर विजय प्राप्त करने के बाद विजयी होकर अपने बन्धुओं के साथ स्वर्ग में चढ़ता है और अपने लोगों को भेंट देता है।

(1) इफिसियों 4:7-8 में विजयी यात्रा

"जब तू ऊँचे पर चढ़ा, तब तू लोगों को बन्धुवाई में ले गया, तू ने मनुष्यों को भेंटें दी।" "जब मसीह स्वर्ग पर चढ़ गया, तो उसने अपने सभी बन्धुओं को अपने विजयी यात्रा में ले लिया। उसने उन्हें सुसमाचार में व्यक्त प्रेम, कृपा और सच्चाई के रूप में जीता या साथ में लिया। विजयी यात्रा यह दर्शाता है कि मसीह ने क्रूस पर अपने लोगों के लिए पाप और मृत्यु पर विजय प्राप्त की और स्वर्ग में उसका विजयी होकर चढ़ जाना, उन सभी मसीहियों के सम्पूर्ण संसार के लिए एक घोषणा है जिसे उसने अपनी दया और अनुग्रह की सामर्थ्य से अपने अधीन कर लिया था!

वह अनुग्रह को भेंट के रूप में देता है (Greek: charis)। वह प्रत्येक मसीही को अपनी करुणा का एक हिस्सा प्रदान करता है। ये भेंट एक विशेष सुसमाचार का कार्य करने का अनुग्रह हो सकता है, लोगों के विशेष समूह से सम्बन्धित या कई आत्मिक भेंटों में से एक अनुग्रह हो सकता है। इस प्रकार प्रत्येक मसीही जन को अपनी आत्मिक भेंट (ग्रीक: करिश्मा) को स्वयं की योग्यता या सरलता के फल के रूप में नहीं देखना चाहिए। उसे इसे केवल कई भेंटों में से एक भेंट के रूप में जो सीमित रूप (एक मापी हुई भेंट के रूप) में है, देखना चाहिए और उसे इस भेंट का प्रयोग (अन्य मसीहियों के जीवन को बनाने के लिए, कलीसिया बनाने के लिए और परमेश्वर की महिमा के लिए) करना चाहिए।

(2) कुरिन्थियों 2:14-16 में विजयी यात्रा

"परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमें हमेशा मसीह के जय के उत्सव में ले चलता है और हमारे माध्यम से हर जगह उसके ज्ञान की सुगंध फैलती है। क्योंकि हम परमेश्वर मसीह की सुगंध उन लोगों के लिए हैं जो बचाए गए और जो नाश हो रहे हैं। एक के लिए हम मृत्यु की गंध हैं, दूसरे के लिए जीवन की सुगंध।" यहाँ पर मसीह के बन्धी मसीही लोग हैं और जब वे विजयी उत्सव में मसीह के पीछे चलते हैं तो वे लोगों के बीच हर जगह मसीह के ज्ञान की सुगंध फैलाते हैं। जो मसीह पर विश्वास करते हैं, परमेश्वर का ज्ञान उन लोगों के लिए जीवन की सुगंघ है। परन्तु वे लोग जो मसीह पर विश्वास नहीं करते उनके लिए यह मृत्यु की गंध है।

(3) कुलुस्सियों 2:15 में विजयी यात्रा

"और उसने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर उनका खुल्लम-खुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर जय-जयकार की ध्वनि सुनाई।" वे स्वर्ग में विजयी प्रवेश के दौरान मसीह के विजय रथ के पीछे बेड़ियों

में जकड़े युद्ध के बन्दियों के रूप में चलते हैं! वे मसीह की शान्ति और सद्भावना का स्वागत नहीं करते हैं। इसके लिए उन्हें विवश किया जाता है (रोमियों 16:20)।

3. **स्वर्ग में मसीह के स्वर्गारोहण का तीसरा परिणाम यह है कि मसीह परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर सभी मसीहियों का एक स्थायी प्रतिनिधित्व है और लगातार स्वर्ग में परमेश्वर के साथ मसीहियों के लिए मध्यस्थ की प्रार्थना करता रहता है (इब्रानियों 7:22)।**

पढ़ें इब्रानियों 9:24-28; इब्रानियों 7:23-28; रोमियों 8:34; 1 यूहन्ना 2:1-2; प्रकाशितवाक्य 8:3-5

(1) **पुराने नियम में शुद्ध करने की व्यवस्था, नए नियम में आत्मिक शुद्धता का प्रतीक है।**

इब्रानियों 9:24 कहता है, "क्योंकि मसीह ने उस हाथ के बनाए हुए पवित्र स्थान में जो सच्चे पवित्र स्थान का नमूना है, प्रवेश नहीं किया, पर स्वर्ग ही में प्रवेश किया, ताकि हमारे लिये अब परमेश्वर के सामने दिखाई दे।"

इब्रानियों 9:23 में लेखक यह मानता है कि सांसारिक मन्दिर की व्यवस्था (पुराने नियम में शुद्ध करने की व्यवस्था) वास्तविक और प्रभावशाली थी, क्योंकि वे पृथ्वी की चीज़ों की शुद्धि के लिए प्रभावी थी, लेकिन वह ये नहीं मानता है कि आन्तरिक और आत्मिक अशुद्धता की शुद्धि के लिए भी उनका उपयोग किया जा सकता है। व्यवस्था द्वारा शुद्धता की विधि शारीरिक रूप के लिए पर्याप्त थी, लेकिन *आत्मिकतौर पर* प्रभावी शुद्धिकरण के लिए एक बेहतर त्याग आवश्यक है।

पुराने नियम की व्यवस्था केवल नए नियम की वास्तविकताओं की *प्रतियाँ या छाया* थी। "स्वर्गीय वस्तुएँ" जिसे आत्मिक शुद्धता की ज़रूरत थी, वह थी लोगों की अशुद्ध सोच। यह शुद्धता आत्मिकतौर से थी, न कि शारीरिकतौर पर। परमेश्वर के लोगों को आत्मिकतौर पर शुद्धिकरण की आवश्यकता है ताकि वे परमेश्वर की ओर पाप की अशुद्धता के बिना बढ़ सकें और ये कि वे परमेश्वर के साथ रहने योग्य बनें।

(2) **नये नियम का शुद्धिकरण यीशु मसीह के लहू के द्वारा होता है।**

मसीह की मृत्यु के द्वारा और इस तरह अपने लहू के छिड़काव से परमेश्वर के लोग "परमेश्वर का निवासस्थान" बन गए (इब्रानियों 3:6; 2 कुरिन्थियों 6:16; इफिसियों 2:22; 1 पतरस 2:5)। इस प्रकार का आत्मिक निवासस्थान होने के लिए, उन्हें "यीशु मसीह के लहू के छिड़काव" (1 पतरस 1:2,19,22) द्वारा नये सिरे से जन्म लेने और पवित्रता का अनुभव होना चाहिए। इस प्रकार, मसीह के लहू के छिड़काव से निम्नलिखित वस्तुएँ पवित्र हुई हैं :

- नई वाचा की पुस्तक (स्वर्ग में लिखा अनन्त सुसमाचार) (इब्रानियों 9:20)
- मसीही नगर (स्वर्गीय यरूशलेम) (इब्रानियों 12:18-24)
- परमेश्वर का इस्राएल (मसीही कलीसिया जो मसीह के क्रूस का अंगीकार करते हैं और जिनके सदस्यों की पवित्र आत्मा द्वारा गवाही दी गई है (गलतियों 6:16; रोमियों 2: 28-29)। उन सभी पर मसीह की मुहर लगी है।

पुराने नियम की *तैयारी* के समय ने नए नियम में *परिपूर्णता* के समय का स्थान लिया। मसीह के उद्धार के कार्य में निम्नलिखित बातें शामिल हैं :

- एक ओर धरती पर पापों के लिए प्रायश्चित्त का पूर्ण बलिदान।
- और दूसरी ओर स्वर्ग में परमेश्वर की उपस्थिति में उसका महायाजक बनना।

इब्रानियों 9:24-26 में लेखक कहता है कि यदि पापियों को परमेश्वर के सामने उपस्थित होना है, यहाँ तक कि एक पापरहित महायाजक प्रतिनिधि द्वारा, तो उन्हें स्वयं को पापों से शुद्ध करना होगा, अन्यथा परमेश्वर की उपस्थिति अपवित्र हो जाएगी। पृथ्वी पर अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा उद्धार का कार्य पूरा करने के बाद, यीशु मसीह परमेश्वर की उपस्थिति में परमेश्वर के साथ हमारा अनन्त प्रतिनिधि होने के लिए स्वर्ग पर चढ़ा।

वह स्वर्ग में सभी मसीहियों का परमेश्वर के साथ प्रतिनिधित्व करता है जहाँ उनके लिए उसके प्रायश्चित का सिद्ध बलिदान परमेश्वर के सामने किया गया (1 यूहन्ना 2:1-2)।

- यद्यपि पुराने नियम में याजक बलिदान चढ़ाने के लिए प्रतिदिन मंदिर में प्रवेश करते थे, लेकिन यीशु मसीह ने हमेशा के लिए *स्वर्ग* में प्रवेश किया।
- यद्यपि पुराने नियम में याजक ने केवल *पशुओं का लहू* ही चढ़ाया, जबकि यीशु मसीह ने *एक बार ही में हमेशा के लिए अपना ही लहू बहा दिया।*
- यद्यपि पुराने नियम में याजक *औपचारिक शुद्धता/पवित्रता* का आश्वासन ही दे सकते था, लेकिन यीशु मसीह ने *हमेशा*

के लिए स्थायी आत्मिक शुद्धता/पवित्रता (सभी पापों के अपराध की क्षमा और सारी शर्मिंदगी से शुद्ध विवेक) का आश्वासन दिया।

(3) **"आखिरी दिन" शब्द का अर्थ है अन्त का समय**

"पर अब युग के अन्त में वह एक बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे" (इब्रानियों 9:26)। उसने पूर्ण रीति से पाप का निपटारा किया। ऐसा नहीं है कि अन्त के समय मसीह आने वाला था, बल्कि यह कि उसके आगमन के द्वारा वह समय "अन्त का समय" बन जायेगा! मसीह के पहले आगमन ने और उसके उद्धार के कार्य ने "अन्त के समय" का शुभारम्भ किया। "आखिरी दिन" (सदी का अन्त) मसीह के पहले आगमन और उसके दूसरे आगमन के बीच का समय है।

मसीह के पहले आगमन के समय "आखिरी दिनों में" निम्नलिखित घटनाएँ होती हैं :

- यीशु मसीह का "अन्त के समय" में प्रगटीकरण (उसका जन्म) (1 पतरस 1:20)।
- परमेश्वर ने "अपने पुत्र के द्वारा अन्तिम समय में" हमसे बात की (पृथ्वी पर उसका जीवन) (इब्रानियों 1:1-2)।
- मसीह ने हमेशा के लिए "सदी के अंत में" स्वयं के बलिदान (अपनी क्रूस पर चढ़ाई) के द्वारा पाप को दूर किया (इब्रानियों 9:26)।
- पवित्र आत्मा को "अंतिम दिनों में" (आत्मा में उसकी वापसी) उण्डेल दिया गया (प्रेरितों के काम 2:17)।

मसीह के दूसरे आगमन के समय में निम्नलिखित घटनाएँ "अन्तिम दिनों में" होती हैं :

- "अन्त के समय" में मरे हुओं में से जी उठना होगा (यूहन्ना 6: 39,40)।
- और जो लोग मसीह के वचन को ग्रहण नहीं करते उनका अंतिम न्याय "अन्त के समय में होगा" (यूहन्ना 12:48)।

इस प्रकार परमेश्वर का *दर्शन* सृष्टि की रचना से लेकर यीशु मसीह के पहले आगमन की ओर अग्रसर होता है। मसीह के पहले आगमन के साथ परमेश्वर का दर्शन पूरा हो चुका है! यीशु मसीह के अलावा कोई और दर्शन नहीं है। परमेश्वर ने "इन दिनों के अन्त में" ("आखिरी समय के अन्त में" या "अन्त के समय" या "अन्ततः") यीशु मसीह के माध्यम से बात की। पुराने नियम में यह वाक्यांश समय की अवधि को दर्शाता है जिसमें पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं की भविष्यद्वाणियों को पूरा किया जाएगा (उत्पत्ति 49: 1 व्यवस्थाविवरण 4:30 यशायाह 2: 2 यरीयाह 30: 24 यहेजकेल 38:16 दानिय्येल 10:14 होशे 3: 5 मीका 4:1)।

(4) **यीशु मसीह ही एकमात्र स्थायी महायाजक है।**

यीशु मसीह द्वारा पुराने नियम की बातों को पूरा करने के दो कारण थे।

- यीशु मसीह पूरी तरह से पापरहित था (इब्रानियों 7: 26 28)। उसका बलिदान सिर्फ वास्तविकता का एक चित्र या छाया नहीं थी, बल्कि वास्तविकता ही थी।
- यीशु मसीह मरे हुओं में से जिलाया गया और वह सर्वदा के लिए जीवित है (इब्रानियों 7: 23-24)! इसलिए वह स्थायी महायाजक और एक स्थायी याजक है।

(5) **यीशु मसीह ही एकमात्र उद्धारकर्ता और एकमात्र मध्यस्थ है।**

फलस्वरूप, दो बातें ऐसी हैं जो केवल यीशु मसीह ही कर सकता है, कोई अन्य भविष्यद्वक्ता या याजक नहीं कर सकता :

- केवल यीशु मसीह ही लोगों को उनके पापों से छुटकारा दिला सकता है। प्रेरित कहता है, "और किसी दूसरे के द्वारा नही। क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें" (प्रेरितों के काम 4:12)।
- केवल यीशु मसीह ही है जो परमेश्वर और लोगों के मध्य में है, और परमेश्वर के साथ हमारे लिए विनती करता है। इब्रानियों 7:25 कहता है कि यीशु मसीह उन लोगों के लिए जो बचाए गए हैं, विनती करने के लिए सर्वदा जीवित है।

(6) **यीशु मसीह ही केवल मध्यस्थ है और वह ही मसीहियों की प्रार्थनाओं को प्रभावशाली बनाता है।**

प्रकाशितवाक्य 8:3-5 सिखाता है कि सिंहासन के सामने चढ़ाने से पहले, पृथ्वी के धर्मी लोगों की प्रार्थनाएँ धूप के साथ मिलायी जाती हैं। फलस्वरूप, स्वर्ग से पृथ्वी पर आग को फेंक दिया जाता है।

- प्रकाशितवाक्य 5: 8 में धूप "धार्मियों की प्रार्थना" का प्रतीक है।
- लेकिन प्रकाशितवाक्य 8: 3 में धूप "यीशु मसीह की सिद्ध प्रार्थना" का प्रतीक है जो स्वर्ग में परमेश्वर की दाहिनी ओर पाया जाता है।

पवित्र लोगों की प्रार्थनाएँ स्वयं से परमेश्वर के नज़दीक नहीं पहुँच सकती, क्योंकि लोग पापी हैं और उनके बीच सबसे धर्मी लोग भी गलत तरीक़े से प्रार्थनाएँ करते हैं। परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए, पवित्र लोगों की प्रार्थना को भी प्रायश्चित की आवश्यकता है! उनकी अपूर्ण प्रार्थनाओं को धूप में मिलाया जाता है, जो स्वर्गदूत को दी जाती हैं। धूप मसीह के उद्धार (प्रायश्चित्त) के पूरे काम का प्रतिनिधित्व करता है जिसे उसने क्रूस पर प्राप्त किया था और वह उन लोगों के लिए पवित्र आत्मा के माध्यम से और अपनी मध्यस्थ की प्रार्थना के द्वारा पूरा करता है। इस प्रकार, धूप विशेष रूप से पृथ्वी पर मसीहियों के लिए स्वर्ग में मसीह की निरन्तर और सही मध्यस्थता का प्रतिनिधित्व करता है, पृथ्वी पर उसकी सताई हुई कलीसिया के लिए (रोमियों 8:34; इब्रानियों 7: 24-25; 9:24)। स्वर्ग में मसीह की सिद्ध प्रार्थना पृथ्वी पर हमारी अपूर्ण प्रार्थनाओं को शुद्ध और पवित्र करती है। मसीह की प्रार्थनाएँ हमारी प्रार्थनाओं में से हर पापी उद्देश्य और सभी प्रकार की स्वार्थ की बातों को दूर करती हैं!

4. स्वर्ग में मसीह के स्वर्गारोहण का चौथा परिणाम यह है कि यीशु मसीह अब अपनी कलीसिया की ओर से सभी पर राज्य करता है । वह इतिहास की घटनाओं को अस्तित्व में लाता है और उन्हें कार्यशील करता है।

पढ़ें रोमियों 4:17; 1 कुरिन्थियों 15:25; इफिसियों 1:20-22; फिलिप्पियों 2:9-11; 1 पतरस 2:22

(1) **यीशु मसीह सब पर राज्य करता है।**

रोमियों 4:17 कहता है, "जो बातें हैं ही नहीं, परमेश्वर उनका नाम ऐसे लेता है, कि मानो वे हैं।"

1 कुरिन्थियों 15:25 कहता है, "क्योंकि जब तक कि वह अपने बैरियों को अपने पाँवों तले न ले आए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है।"

इफिसियों 1:20-22 में लिखा है : "जो उसने मसीह के विषय में किया, कि उस को मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर : सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ्य, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर आनेवाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया : और सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया : और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया।"

फिलिप्पियों 2:9-11 इस प्रकार कहता है : "इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है : कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें : और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।"

1 पतरस 3:22 यह बताता है, "वह स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठ गया; और स्वर्गदूत और अधिकारी और सामर्थी उसके आधीन किए गए हैं।"

यीशु मसीह स्वर्ग में चढ़ा और सम्पूर्ण जगत में हर सोचने वाली शक्ति और पृथ्वी से ऊपर परमेश्वर के दाहिने हाथ पर सिंहासन पर जा बैठा (मत्ती 28:18)। स्वर्ग में सभी स्वर्गदूत, आकाश की सभी दुष्टात्माएँ, पृथ्वी की सारी प्रभुता स्वेच्छा या अनिच्छा से राज्य करने वाले प्रभु के आधीन हैं। वह इस प्रकार सम्पूर्ण जगत और साथ ही पूरी कलीसिया का प्रमुख है। वह अपनी कलीसिया के हित में सम्पूर्ण जगत पर राज्य करता है! वह ऐसे राज्य करता है कि सम्पूर्ण जगत में हो रही हर घटना और पृथ्वी पर बीता हुआ इतिहास दोनों मिलकर कलीसिया के हितों की पूर्ति करता है! फिर से जी उठा और सिंहासन पर विराजमान प्रभु यीशु राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है (प्रकाशितवाक्य 17:14)! पृथ्वी पर जो कुछ भी होता है, उसकी इच्छा या अनुमति के बिना नहीं होता। और जो लोग उसके जयवन्त उद्धार और अनुग्रह (उसकी दया और करुणा) के सामने अपने आप को समर्पित नहीं करते, वह न्याय के समय उसके सामने अवश्य झुकेंगे (तुलना करें रोमियों 11:22)!

(2) **यीशु मसीह, इतिहास की घटनाओं को उद्धार और न्याय की उसकी योजना के साथ जोड़ता है और उन्हें कार्यशील करता है।**

परमेश्वर अपने सिंहासन पर जो सृजे गए सम्पूर्ण जगत के केंद्र में है, पृथ्वी और उसके लोगों के लिए यीशु मसीह के माध्यम से अपनी योजना को पूरा करता है। जब यीशु मसीह एक मुहर को तोड़ता है और स्वर्ग में पुस्तक के उस हिस्से को खोलता है, तो वह उद्धार और न्याय की परमेश्वर की योजना को प्रगट करता है और इसे कार्यशील करता है। आपके साथ, आपकी कलीसिया के साथ या आपके देश में ऐसा कुछ भी नहीं होता जिसमें परमेश्वर की इच्छा या अनुमति ना हो!

उदाहरण के लिए, यीशु मसीह पृथ्वी पर अपनी आँखों को लगाए रहता है और उद्धार के सुसमाचार के प्रचार के माध्यम से लोगों के हृदयों और जीवनों पर विजय प्राप्त करता है (प्रकाशितवाक्य 6:1-2)। लेकिन पाप में गिरने (उत्पत्ति 2:16-17) के कारण वह इस बात की अनुमति देता है कि मसीहियों को उनके शत्रुओं द्वारा सताया जाये और उनका वध

किया जाये (प्रकाशितवाक्य 6: 3-4)। वह यह भी अनुमति देता है कि मसीही लोग (और अन्य निर्धन और निर्बल लोग) राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य और न्यायिक हाकिमों (प्रकाशितवाक्य 6: 5-6) द्वारा सताए जाएँ (प्रकाशितवाक्य 6:5-6)। और वह यह भी अनुमति देता है कि युद्ध, अकाल, महामारी और दुर्घटना (येहेजेकेल 14:21; प्रकाशितवाक्य 6: 7-8) के कारण मसीही लोगों के साथ-साथ गैर मसीही लोग भी मारे जाएँ।

फिर भी, वह अपनी कलीसिया के हित में सम्पूर्ण जगत और पृथ्वी पर राज्य करता है (इफिसियों 1:22; रोमियों 8:28)। उसने वायदा किया, "कि अधोलोक के फाटक कलीसिया पर प्रबल न होंगे" (मत्ती 16:18)। समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे (इफिसियों 1:10; कुलुस्सियों 1:19-20)। अन्त में, हर एक घुटना उसके सामने झुकेगा और हर एक जुबान उसका अंगीकार करेगी कि यीशु ही प्रभु है!

5. स्वर्ग में मसीह के स्वर्गारोहण का पाँचवां परिणाम यह है कि यीशु मसीह सम्पूर्ण जगत में परमेश्वर के राज्य और वास्तविकता को भरकर सम्पूर्ण जगत में परमेश्वर के राज्य के अन्तिम चरण की स्थापना कर रहा है।

पढ़ें भजन 68:18; इफिसियों 1:9-10; इफिसियों 4:9-10

(1) **पुराने और नए नियम के वचन।**

भजन 68:18 में पुराने नियम में दिए गए शब्दों का सिर्फ *हवाला* ही नहीं दिया गया है, लेकिन उन्हें इफिसियों 4: 8 के नये नियम में *लागू* भी किया गया है। पुराने नियम में परमेश्वर के बारे में भजन जिस प्रकार कहता है, उसे नए नियम में यीशु मसीह द्वारा पूरा किया जाता है! क्योंकि पुराने नियम और नए नियम दोनों में लेखक यीशु मसीह की आत्मा ही है और क्योंकि पुराने नियम को नए नियम द्वारा बेहतर तरीके से समझाया गया है, इसलिए पौलुस के पास ये अधिकार है की जो कुछ पुराने नियम में परमेश्वर के बारे में कहा गया है उसे वह नए नियम में यीशु मसीह के द्वारा लागू करे।

पुराने नियम में परमेश्वर ने अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की, विजय प्राप्त लोगों से *भेंटें (युद्ध की चीजें) लीं* और बन्दियों के साथ उसका स्वर्गारोहण हुआ (कई बन्दियों को अपने साथ ले जाना)। परन्तु *नये नियम* में यीशु मसीह ने लोगों पर अपनी मृत्यु और पृथ्वी पर पुनरुत्थान के द्वारा विजय प्राप्त की, अपने लोगों को धरती पर *भेंट दी* और अपने साथ विजय प्राप्त बन्दियों को स्वर्ग में चढ़ा ले गया।

जैसा कि 2 कुरिन्थियों 2:14 और इफिसियों 4: 8 में, "बन्दी बनाये जानेवाले" मसीही हैं जिन्हें उसके प्रेम, दया (करुणा), अनुग्रह (क्षमा) और सच्चाई (यूहन्ना 1:17) ने जीत लिया है। अब वो यीशु मसीह के साथ उसके जय के उत्सव में उसका अनुसरण करते हैं। यीशु मसीह ने उसे युद्ध की सामग्री के रूप में ग्रहण किया और उद्धार के काम के लिए भेंट दी।

यीशु मसीह को इसलिए मिला ताकि वो दे। उसने "बन्धुवों" इसलिए अपने साथ लिया ताकि वह उन्हें अपना राज्य दे सके जिसमें वे पृथ्वी पर राज्य के कार्यों को करें। इफिसियों 4:11 में मसीह ने समस्त संसार की मसीही कलीसिया को प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं, प्रचारकों, रखवालों और उपदेशकों को भेंट के रूप में इसलिए दिया है (लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि ये भेंट सभी स्थानीय कलीसियों के लिए है) ताकि मसीहियों को सेवा के अपने कार्यों के लिए और मसीह की देह का निर्माण करने के लिए तैयार किया जा सके। ये भेंटें कार्यालयों (नियुक्त सेवक) के बजाय कार्य (सेवा) है। महत्वपूर्ण यह है कि ये कार्यालय हर मण्डली के प्राचीनों की अगुवाई में कार्य करते हैं (प्रेरितों के काम 14:23; तीतुस 1:5; 1 पतरस 5:1)।

(2) **निर्जल स्थान में उतरना और स्वर्ग पर चढ़ना (इफिसियों 4:9-10)।**

"पृथ्वी के निचले स्थान" या "पृथ्वी की निचली जगहें" "सारे आकाश से भी ऊपर की जगहों" के विपरीत हैं। पृथ्वी की निचली जगहों पर उसका उतर जाना उसके स्वर्गारोहण के एकदम विपरीत है। इफिसियों 4:9-10 में प्रेरित पौलुस और 1 पतरस 3:18-22 में प्रेरित पतरस यीशु को किसी जगह (अधोलोक या नरक) में उतरते हुए नहीं दर्शाते हैं, बल्कि वे एक स्थिति (अवस्था) को दर्शाते (जो किसी भी मनुष्य की तुलना में कम) हैं। यीशु मसीह पहले से ही मृत लोगों की आत्माओं को सुसमाचार प्रचार करने के लिए निचली जगह (या नरक) में नहीं उतरा परन्तु क्रूस की मृत्यु सहने के लिए वह पृथ्वी पर उतरा। यद्यपि यीशु मसीह पूर्ण रीति से परमेश्वर के तुल्य था, उसने स्वयं को इस महिमान्वित स्थिति (अवस्था) के लिए शून्य कर दिया, उसने मनुष्य के गिरते मानव स्वभाव को पहन लिया, उसने सभी लोगों के लिए दास का स्वरूप धारण किया, और क्रूस पर लोगों के पापों के लिए एक अपराधी के रूप में मारा गया (फिलिप्पियों 2-5-8) और अन्त में परमेश्वर ने उसे उसके मानव स्वभाव में होते हुए त्याग दिया (मत्ती 27:46)।

इसलिए परमेश्वर उसे ऊँचे स्थान पर बैठाता है ताकि एक दिन हर एक घुटना उसके सामने झुके और हर जीभ यह अंगीकार करे कि वो ही राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है (फिलिप्पियों 2:9-11; तुलना करें - 1 पतरस 3:22)। यीशु मसीह को छोड़ संसार के पापों को अपने ऊपर लेने के लिए कोई भी इस अवस्था में नहीं आया (1 पतरस 2:24) और न ही नरक की पीड़ा को सहा (मत्ती 27:46)! यीशु मसीह को छोड़ और कोई भी मृतकों में से जी उठकर परमेश्वर पिता के दाहिने ओर बेठने के योग्य न निकला, और उस अवस्था से परमेश्वर के उद्धार की योजना को प्रगट करने और पूरा करने के योग्य कोई भी नहीं है।

(3) **अपने अंतिम चरण में परमेश्वर का राज्य।**

यीशु मसीह की विजय तब पूरी होगी जब वह पुराने नियम और नये नियम के प्रकाशन को पूरा करेगा और इससे सम्पूर्ण जगत भर देगा (पूरा, सिद्ध) (इफिसियों 4:9; कुलुस्सियों 1:19-20)। वह अपनी परिपूर्णता से मसीही कलीसिया को भर देगा (इफिसियों 1:23; तुलना करें 2 पतरस 1:4; 1 यूहन्ना 3:1-3)। वह तब तक राज्य करेगा जब तक की उसके सभी शत्रु उसके पैरों तले न आ जाए (1 कुरिन्थियों)। परमेश्वर स्वर्ग में और पृथ्वी पर की सब वस्तुओं को यीशु मसीह के आधीन कर देगा (इफिसियों 1:10)। उसका राज्य अन्ततः सम्पूर्ण जगत में फैल जायेगा (दानिय्येल 2:44)! और उसके राज्य का अन्त न होगा (यशायाह 9:7; 2 पतरस 1:11)!

6. **स्वर्ग में मसीह के स्वर्गारोहण का छठवां परिणाम यह है कि मसीह ने पवित्र आत्मा को अपने प्रतिनिधि के रूप में उण्डेल दिया।**

नियमावली 5, अध्याय 9 देखें।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रिया]*** ***परमेश्वर के वचन के लिए प्रार्थना करें***

आज जो कुछ आपने सीखा है, उसके लिए ***समूह में एक-एक करके परमेश्वर से प्रार्थना करें।***
या समूह को दो या तीन में विभाजित करें और आज जो कुछ आपने सीखा है उसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** ***अगले अध्याय के लिए***

(***समूह का अगुवा।*** समूह के सदस्यों को यह कार्य घर के लिए लिखित रूप में दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि बनाने दें)।

1. समर्पण। शिष्य बनाने और मसीह की कलीसिया का निर्माण करने के लिए प्रतिबद्ध रहें।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "स्वर्गारोहण - मसीह के राज्याभिषेक के दिन को स्मरण करना" और उसकी शिक्षा का प्रचार करना, पढ़ाना या पढ़ना।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **1 कुरिन्थियों 9 - 12** के अध्यायों को आधा प्रतिदिन पढ़ने के लिए समय चुन लें। सत्य विधि का उपयोग करें। इसके नोट्स बना लें।
4. याद करना। बाइबल की नई आयतों पर ध्यान लगाएँ और उन्हें याद करें **(2) (यूहन्ना 1:16)**। पहले याद की गई पाँच बाइबल की आयतों की समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। (**यूहन्ना 2)**। बाइबल अध्ययन की पाँच चरणों की विधि का प्रयोग करें।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।